सांध्य दैनिक 4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 9 ● अंक: 103 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, गुरुवार, 18 मई, 2023

मूल्य ₹ 3/-

आइये हम अपने आज का बलिदान कर दें ताकि हमारे बच्चों का कल बेहतर हो सके।

-डॉ. अब्दुल कलाम

केजरीवाल ने मुख्य सचिव को बदलने... 7 | कर्नाटक में बदली वोटरों की... 3 | धर्म का राजनीतिकरण लोकतंत्र... 2

बनी सहमति, सिद्धारमैया ही होंगे कर्नाटक के मुख्यमंत्री

डीके शिवकुमार बनेंगे डिप्टी सीएम

» कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने किया फैसला

» दूसरी बार सीएम बनेंगे सिद्धारमैया

» शिवकुमार अध्यक्ष बने रहेंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। छह दिन के माथापच्ची केबाद आखिर कर्नाटक में मुख्यमंत्री की घोषणा हो गई। कांग्रेस ने वहां के वरिष्ठ नेता सिद्धारमैया को राज्य की कमान सौंप दी है जबकि डीके शिवकुमार उपमुख्यमंत्री होंगे। इसका फैसला पार्टी अध्यक्ष खरगे ने किया है। प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए कांग्रेस नेता रणदीप सुरजेवाला ने आज कहा कि कर्नाटक में जीत पार्टी नहीं, बल्कि जनता की है। उन्होंने कहा कि सीएम कौन बनेगा इसका फैसला पार्टी अध्यक्ष ने किया है और डीके शिवकुमार भी सीएम पद के दावेदार थे।

सुरजेवाला ने आगे कहा कि लोकसभा चुनाव तक डीके शिवकुमार अध्यक्ष बने रहेंगे और पार्टी को और मजबूत करने का काम करेंगे। उन्होंने इसी के साथ कहा कि कांग्रेस पार्टी की सरकार कर्नाटक में अपनी पहली केबिनेट बैठक में पांच गारंटी लागू करेगी। सिद्धारमैया दूसरी बार सीएम पद की शपथ लेंगे। 75 वर्षीय सिद्धारमैया 2013 से 2018 तक कर्नाटक के सीएम थे। वहीं, 61 वर्षीय शिवकुमार राज्य में मंत्री रह चुके हैं और वर्तमान में कर्नाटक कांग्रेस प्रमुख हैं। बता दें कि 224 सदस्यीय कर्नाटक विधानसभा के चुनाव में कांग्रेस ने 135 सीटों के साथ बड़ी जीत हासिल की है। वहीं, सत्तारूढ़ भाजपा ने 66 और पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा के नेतृत्व वाले जनता दल (सेक्युलर) ने 19 सीटें हासिल कीं।

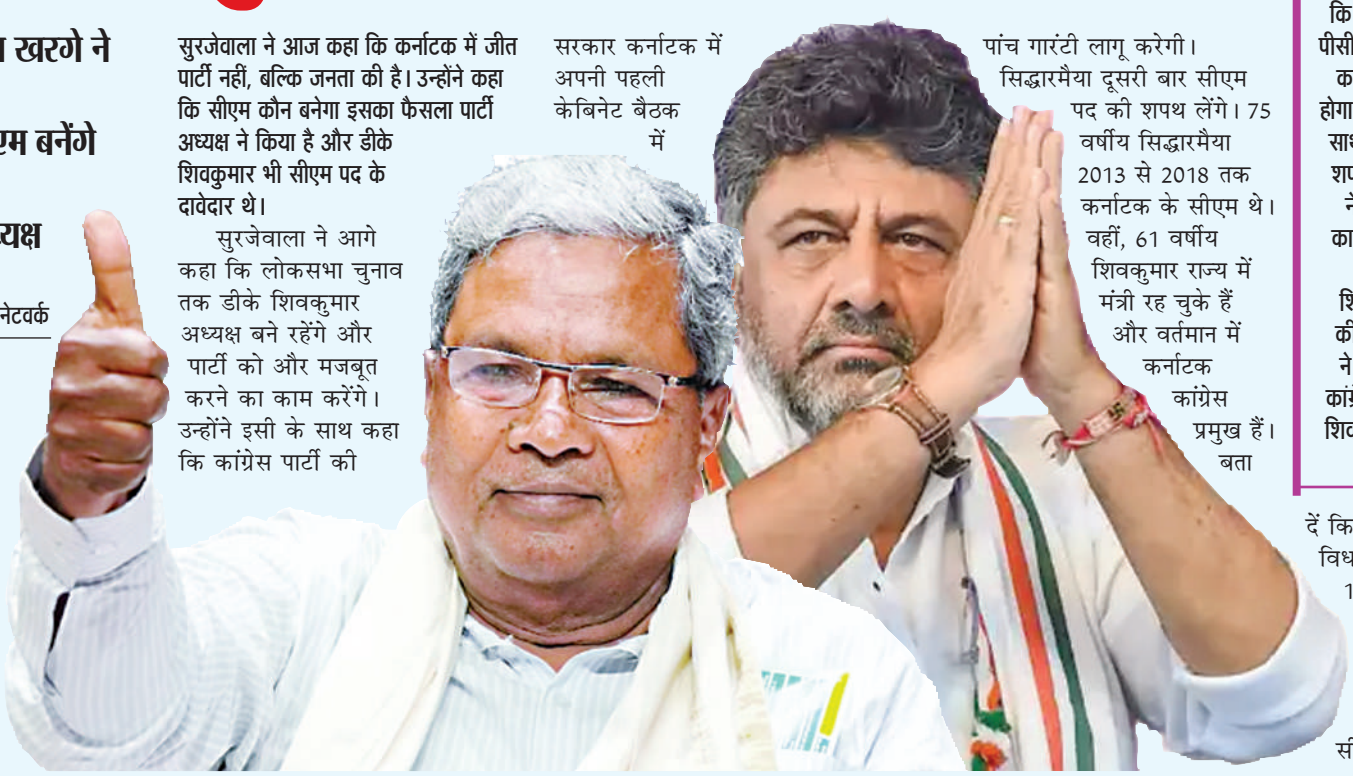

20 मई को होगा शपथ ग्रहण

कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने कहा कि शिवकुमार संसदीय चुनाव के अंत तक पीसीसी अध्यक्ष के रूप में बने रहेंगे। उन्होंने कहा कि 20 मई को शपथ ग्रहण समारोह होगा जिसमें मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री के साथ ही मंत्रियों का एक समूह भी उस दिन शपथ लेगा। सूत्रों के अनुसार, पार्टी नेतृत्व ने लगभग 20-25 नए मंत्रियों को रखने का भी फैसला किया है। सरकार गठन पर सहमति बनने के बाद सिद्धारमैया और शिवकुमार ने मिलकर खरगे से मुलाकात की। इसको लेकर कांग्रेस नेता सुरजेवाला ने एक फोटो भी ट्वीट की। सुरजेवाला ने कांग्रेस अध्यक्ष खरगे द्वारा सिद्धारमैया और शिवकुमार के हाथ उठाते हुए तस्वीर डालते हुए लिखा की ये विजेता टीम है।

ईडी के दफ्तर पहुंची राबड़ी देवी

» नौकरी के बदले जमीन मामले में पूछताछ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी दिल्ली में नौकरी के बदले जमीन मामले से जुड़े धनशोधन के आरोपों के संबंध में पूछताछ के लिए ईडी के सामने पेश हुईं। जांच एजेंसी के एक अधिकारी ने इसकी जानकारी दी। नौकरी के बदले जमीन लेने के मामले में बिहार की पूर्व सीएम राबड़ी देवी से सीबीआई भी पूछताछ कर चुकी है।

अब अब ईडी मनी लॉन्ड्रिंग के आरोपों के तहत उनका बयान दर्ज कर रही है। बता दें कि नौकरी के बदले जमीन मामले में सीबीआई ने बीते साल 18 मई को केस दर्ज किया था। 18 अक्टूबर को इस मामले में चार्जशीट दाखिल कर दी गई थी। इस मामले में 16 लोगों को आरोपी बनाया गया था।

सीबीआई ने इस मामले में भोला यादव को गिरफ्तार किया था, जो लालू यादव के रेल मंत्री रहते उनके ओएसडी थे। इस मामले में सीबीआई लालू यादव के बेटे तेजस्वी यादव से भी तीन बार पूछताछ कर चुकी है।

किरिन रिजिजू से छीना गया कानून मंत्रालय

» अब संभालेंगे-मिनिस्ट्री ऑफ अर्थ एंड साइंस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने दो मंत्रियों के विभाग बदल दिए हैं। सबसे चौकाने वाला नाम किरिन रिजिजू का है। उनसे कानून मंत्रालय छीन लिया गया है। किरेन रिजिजू ने अपने ट्विटर बायो में भी मंत्रालय का नाम बदल दिया है। अब वहां- मिनिस्टर ऑफ अर्थ साइंस, इंडिया लिखा है। अब वह भू-विज्ञान मंत्रालय का पोर्टफोलियो संभालेंगे।

उनकी जगह अर्जुन राम मेघवाल, उनके मौजूदा विभागों के अलावा कानून और न्याय मंत्रालय में राज्य मंत्री के रूप में स्वतंत्र प्रभार सौंपा गया है। किरेन रिजिजू अरुणाचल प्रदेश से आते हैं। पिछले कुछ समय से वह और रिटायर्ड जजों पर टिप्पणियों को लेकर चर्चा में रहे। किरेन रिजिजू ने कॉलेजियम सिस्टम को लेकर भी कहा था कि देश में कोई किसी को चेतावनी नहीं दे सकता है। देश में सभी लोग संविधान के हिसाब से काम करते हैं। इसके अलावा भी कुछ सख्त टिप्पणियां उन्होंने की थी।

मुख्य न्यायाधीश को दिया धन्यवाद

केंद्रीय मंत्री ने जिम्मेदारी बदलने जाने पर प्रतिक्रिया दी है। रिजिजू ने मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, अन्य न्यायाधीशों और कानून अधिकारियों को उनके समर्थन के लिए शुक्रिया कहा है। रिजिजू ने कहा कि केंद्रीय कानून और न्याय मंत्री के रूप में सेवा करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। मुख्य न्यायाधीश समेत पूरी न्यायपालिका को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद करता हूं।

धर्म का राजनीतिकरण लोकतंत्र के लिए घातक

» लोकसभा चुनाव की तैयारी पर की चर्चा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बसपा सुप्रीमो मायावती ने यूपी निकाय चुनाव में करारी हार पर पार्टी पदाधिकारियों के साथ मंथन करने के लिए गुरुवार को लखनऊ में बैठक बुलाई । बुधवार को उन्होंने ट्वीट कर कहा कि धर्म का राजनीतिक स्वार्थ के लिए इस्तेमाल देश के लोकतंत्र के लिए घातक है। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि यूपी में सत्ताधारी पार्टी द्वारा जनविरोधी नीतियों, गलत कार्यकलापों आदि कमियों का चुनाव पर प्रभाव कम करने के लिए सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग, इनका द्वेषपूर्ण, दमनकारी व्यवहार एवं धर्म का राजनीतिक स्वार्थ के लिए इस्तेमाल अति-गंभीर व अति-चिन्ताजनक है। जो कि लोकतंत्र के लिए घातक है।

प्रदेश में 2022 में हुए विधानसभा चुनाव के बाद यूपी निकाय चुनाव में भी बसपा को करारी हार का सामना करना पड़ा है। प्रदेश के सभी 17 नगर निगमों में सभी जगहों पर भाजपा की जीत हुई है। सपा-बसपा एक भी सीट नहीं जीत सकी हैं। उन्होंने कहा कि इस जन विरोधी चुनौतियों का डटकर मुकाबला करने के लिए ठोस रणनीति बनाकर लोकसभा चुनाव के लिए अभी से तैयारी करने को यूपी के सभी छोटे बड़े पदाधिकारियों की विशेष बैठक बुलाई । मायावती ने ट्वीट के जरिए कहा कि सत्ताधारी पार्टी द्वारा जनविरोधी नीतियों, गलत कार्यकलापों आदि कमियों का चुनाव पर प्रभाव कम करने के लिए सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया।

जनविरोधी चुनौतियों का डटकर करें मुकाबला

मायावती ने कहा कि इन घोर जनविरोधी चुनौतियों का डटकर मुकाबला करने हेतु ठोस रणनीति बनाकर उसके हिसाब से आगे खासकर लोकसभा आम चुनाव के लिए अभी से ही तैयारी में जुट जाने के लिए यूपी स्टेट के सभी छोटे-बड़े पदाधिकारियों, मण्डल व ज़िला अध्यक्षों आदि की लखनऊ में कल विशेष बैठक है। यूपी में सत्ताधारी पार्टी द्वारा जनविरोधी नीतियों, गलत कार्यकलापों आदि कमियों का चुनाव पर प्रभाव कम करने के लिए सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग, इनका द्वेषपूर्ण, दमनकारी व्यवहार एवं धर्म का राजनीतिक स्वार्थ के लिए इस्तेमाल अति-गंभीर व अति-चिन्ताजनक, जो लोकतंत्र के लिए घातक।

'वोट हमारा राज तुम्हारा' को गांव-गांव तक पहुंचाने के निर्देश

मायावती ने की समीक्षा बैठक, सपा-भाजपा पर बोला हमला

बसपा प्रमुख मायावती ने निकाय चुनाव में पार्टी के खराब प्रदर्शन की समीक्षा और आगे की तैयारियों को पुख्ता करने के लिए पार्टी के सभी छोटे बड़े पदाधिकारियों की आज एक अहम बैठक बुलाई। बैठक में जोनल कोआर्डिनेटरों के साथ ही मुख्य मंडल प्रभारी, जिला बाममसेफ संयोजक और सभी जिलाध्यक्ष भी बुलाए गए। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने आज प्रदेश पार्टी कार्यालय में यूपी स्टेट के सभी छोटे-बड़े पदाधिकारियों तथा 18 मण्डलों व 75 जिला अध्यक्षों आदि के विशेष बैठक में समुचित फीडबैक लेने के बाद जरूरी दिशा-निर्देश देते हुये कहा कि करोड़ों उपेक्षितों, गरीबों, मजदूरों, छोटे व्यापारियों व अन्य तमाम मेहनतकश समाज के लोगों के हित व कल्याण का सच्चा प्रतिनिधित्व करने वाली अम्बेडकरवादी पार्टी होने के नाते बी.एस.पी. को इस प्रकार की चुनौतियों का सदा सामना करना पड़ा है, लेकिन परमपूज्य बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर के कारवाँ को बिना थके, बिना रूके, बिना हिम्मत हारे चुनाव जीतकर सत्ता प्राप्ति के जरिये अपना उद्धार खुद करने योग्य बनने के मिशनरी लक्ष्य के लिए पूरी लगन से लगातार लगे रहना है।

मेहनती, ईमानदार व मिशनरी लोगों को बढ़ाएं

बी.एस.पी. प्रमुख ने जमीनी स्तर पर मेहनती, ईमानदार व मिशनरी लोगों को बढ़ाने का निर्देश देते हुए कहा कि निकाय चुनाव में लोगों की आपसी गुटबाजी रंजिश व मनमुटाव तथा चुनाव में टिकट नही मिल पाने आदि के कारण हालात थोड़े भिन्न जरूर रहते हैं, जिसको ध्यान में रखकर ही आगे संगठन के मजबूती की कार्रवाई करने की जरूरत है। ऐसे हालात में किसी को भी कानून अपने हाथ में नहीं लेने का सख्त निर्देश देते हुए उन्होंने कहा कि पार्टी के जनाधार को बढ़ाना एक सतत् प्रक्रिया है जिसका सामूहिक प्रयास पूरी मुस्तैदी व जी-जान के साथ लगातार जारी रहना चाहिए, यही परमपूज्य बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर व मान्यवर कांशीराम का बताया हुआ रास्ता है जिसपर हर हाल में अमल करते रहना है।

बूथ-बूथ जाकर लोगों को जोड़ें कार्यकर्ता

» अखिलेश बोले- लोस चुनाव के लिए अभी से जुटें सभी कार्यकर्ता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लोक सभा चुनाव अगले साल हैं। सपा मुखिया अखिलेश यादव ने अभी से तैयारी शुरू कर दी है। उन्होंने अपने पार्टी कार्यकताओं से कहा हैं कि वो लोकसभा चुनाव के लिए अभी से जुट जाने के लिए कहा है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से बूथ स्तर तक पार्टी संगठन को मजबूत करने के लिए कहा है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बूथ स्तर पर संगठन को सक्रिय करने का आह्वान करते हुए कहा कि निकाय चुनावों में भाजपा ने सत्ता का भारी दुरुपयोग कर लोकतंत्र को कलंकित किया है।

निर्वाचन आयोग की भूमिका सवालों के घेरे में रही है। प्रशासन ने भाजपा कार्यकर्ता की तरह काम किया है। जनता इस सच से वाकिफ हैं और वह इसका करारा जवाब 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव में देगी।

वहीं नगर निकाय चुनाव में सपा रालोद मिलकर लड़े थे। इसका कितना नफा, कितना नुकसान हुआ इसका रालोद मंथन कर रहा है। रालोद महापौर पद पर चुनाव नहीं लड़ा था और नगर पालिका और नगर पंचायतों के चुनावी रण में ही उसके उम्मदीवार खड़े हुए थे। सपा रालोद का गठबंधन विधानसभा चुनाव 2022 में हुआ था जो इस बार के नगर निकाय चुनाव में भी रहा। शुरुआत में टिकट वितरण को लेकर कई सीटों पर दोनों के बीच तनातनी हुई लेकिन बाद में फैसला हो गया।

पार्टी भाजपा की कुनीतियों से बराबर लड़ती रहेगी

कार्यालय में आए विधायकों एवं अन्य नेताओं को संबोधित करते हुए अखिलेश ने निकाय चुनाव में जीते पार्टी कार्यकर्ताओं को बधाई दी। पार्टी के लिए लगातार संघर्ष करने वाले नेताओं का हौसला आफजाई किया। उन्होंने कहा कि 2024 लोकसभा चुनाव की तैयारी में अभी से जुट जाना है। बूथ स्तर तक पार्टी का मजबूत संगठन बनाकर जनता के दुख दर्द में शरीक होते रहना है। सपा,भाजपा की कुनीतियों से बराबर लड़ती रहेगी। निकाय चुनाव में भाजपा के लगभग 25 फीसदी सांसदों के क्षेत्र में जनता ने भाजपा प्रत्याशियों को हरा दिया है।उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव में जनता भाजपा की सत्ता पलट देगी। जनता समझ चुकी है कि भाजपा सत्ता का दुरुपयोग कर रही है।

बीजेपी को पिछड़ों से इतनी नफरत और दुश्मनी क्यों : लालू यादव

» देश के ओबीसी को जानवरों से भी बदतर मानती है संघ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। जातीय जन-गणना रुकने पर राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव गुस्से में हैं। दिल्ली पहुंचने के बाद उन्होंने केंद्र सरकार पर जमकर निशाना साधा है। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि केंद्र सरकार घड़ियाल की गिनती कर लेती है लेकिन देश के बहुसंख्यक गरीबों, वंचितों, उपेक्षितों, पिछड़ों और अतिपिछड़ों की नहीं? आरएसएस-बीजेपी देश के ओबीसी को जानवरों से भी बदतर मानती है।

इसलिए इन्हें जातीय गणना और जातीय सर्वे से दिक्कत है। बीजेपी को पिछड़ों से इतनी नफरत और दुश्मनी क्यों? अब लालू प्रसाद के इस बयान से बिहार में सियासत तेज हो गई है। यह पहली बार नहीं है जब लालू प्रसाद ने जातीय जन-गणना को लेकर प्रतिक्रिया दी है। इससे पहले 5 मई को लालू प्रसाद ने सोशल मीडिया पर लिखा कि जातिगत जनगणना बहुसंख्यक जनता की मांग है और यह हो कर रहेगा। बीजेपी बहुसंख्यक पिछड़ों की गणना से डरती क्यों है? जो जातीय गणना का विरोधी है वह समता, मानवता, समानता का विरोधी एवं ऊंच-नीच, गरीबी, बेरोजगारी, पिछड़ेपन, सामाजिक व आर्थिक भेदभाव का समर्थक है।

नहीं चलेगा बीजेपी का झूठ फरेब : प्रताप सिंह

» 2023 में फिर बनेगी राजस्थान में कांग्रेस सरकार

» पाक विस्थापितों के मकान तोड़ने के मामले की जानकारी से किया इंकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री एवं जयपुर शहर जिलाध्यक्ष प्रताप सिंह खाचरियावास ने प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में सैकड़ों कांग्रेस कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि आने वाले चुनाव में बीजेपी का झूठ फरेब और धोखा नहीं चलेगा। पूरे देश में महंगाई, गरीबी और बेरोजगारी के कारण जनता खून के आंसू रो रही है। राहुल गांधी देश की जनता की आवाज बनकर अडानी घोटाले के विरोध में आवाज उठा रहे हैं।

कर्नाटक में कांग्रेस की जीत ने यह साबित कर दिया है कि बीजेपी का झूठ और धोखा अब नहीं चलने वाला। खाचरियावास ने कहा कि प्रदेश के बीजेपी नेता बिजली-पानी के मुद्दे पर लोगों को भ्रमित करने की कोशिश कर रहे हैं। 100 यूनिट तक बिजली फ्री कर दी गई है, किसानों की 2000 यूनिट बिजली फ्री कर दी गई है। यदि कहीं भी कोई शिकायत आएगी तो सरकार उसे दूर करेगी।

खाचरियावास ने कहा कि पूरे प्रदेश में महंगाई राहत शिविरों में जनता की भारी भीड़ उमड़ रही है। लगभग चार करोड़ लोगों का पंजीकरण अभी तक हो चुका है। इससे साबित हो गया है कि महंगाई राहत कैंपों में जनता की भारी भीड़ और सहभागिता है और दूसरी तरफ बीजेपी की जन आक्रोश सभाएं और प्रदर्शन पूरी तरह से फेल हो गए हैं। जैसलमेर में पाक विस्थापितों के मकान तोड़ने के मामले को लेकर खाचरियावास ने कहा, मेरी जानकारी में नहीं है। कांग्रेस सरकार तो खुद प्रशासन गांव और शहरों के संघ अभियान चला रही है। वह सरकार किसी को उजाड़ नहीं सकती। लोकल लेवल पर क्या मामला है, मेरी जानकारी में नहीं है। इस दौरान कैबिनेट मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने कहा, बीजेपी तुष्टीकरण की राजनीति कर रही है।कर्नाटक चुनाव हार से बौखला गई बीजेपी, राहुल गांधी के हाथ में कर्नाटक में बजरंगबली ने संजीवनी दी और वह संजीवनी काम कर गई।

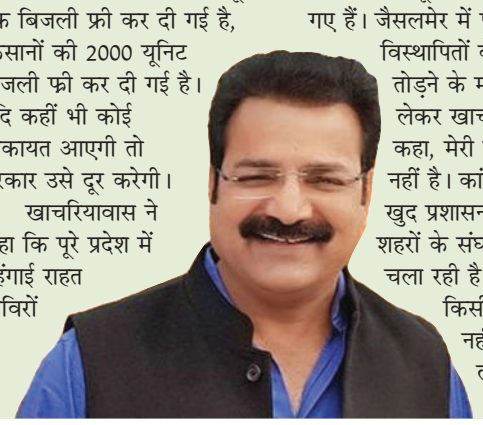

बीजेपी हिंदू-मुस्लिम के नाम पर दंगा कराने की कर रही कोशिश

बीजेपी हिंदू मुस्लिम के नाम पर दंगा कराने की कोशिश कर रही है, लेकिन राजस्थान में रामनवमी और हनुमान जयंती की यात्रा शांतिपूर्वक निकली। राम जी हमेशा कांग्रेस को आशीर्वाद देते हैं, अब बीजेपी का झूठ नहीं चलने वाला। बीजेपी रोटी छीन कर वोट ले रही, बीजेपी का चुनाव का एजेंडा खत्म हो चुका है। बीजेपी वही काम करती है, जिससे वोट मिलता है। कांग्रेस हमेशा सभी धर्मों को साथ लेकर चलती है।

कर्नाटक में बदली वोटरों की सोच

विकास के मुद्दे पर की वोटिंग

- भाजपा का ध्रुवीकरण नहीं चला
- कांग्रेस ने किया बोम्मई सरकार के भ्रष्टाचार पर करारा वार
- भाजपा सरकार की भ्रष्ट छवि का असर
- त्रिकोणीय मुकाबले का प्रभाव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कर्नाटक में कांग्रेस अपने सीएम को शपथ दिलवाने की कवायद में जुटी है तो इस बीच पूर्व सीएम बसवराज बोम्मई ने भाजपा के हार के लिए अपनी तैयारियों की कमी को कारण बताया और कहा कि कांग्रेस ने हमसे ज्यादा अच्छी रणनीति बनाई इसलिए वो सत्ता के शिखर पर पहुंची। सियासी चिंतक के बीच बीजपी क्यों हारी, कांग्रेस क्यों जीती इस पर चर्चा जारी है। ज्ञात हो कर्नाटक विधानसभा के नतीजों को आए कुछ ही दिन हुए हैं। कांग्रेस के आंकड़े बढ़िया हैं। उसने 224 में से 135 सीट जीतीं, वहीं भाजपा ने 66 पर जीत हासिल की। कांग्रेस ने दशकों में ऐसी बड़ी जीत देखी है। उसके लिए यह जश्न का मौका है। विशेषज्ञ कांग्रेस की जीत के कई कारण बता रहे हैं।

राज्य में पिछली भाजपा सरकार की भ्रष्ट छवि, जिसे रेखांकित करने में कांग्रेस कामयाब रही, कांग्रेस का मजबूत, एकजुट स्थानीय नेतृत्व बनाम भाजपा का बिखरा हुआ स्थानीय नेतृत्व, भाजपा इस स्थानीय चुनाव को राष्ट्रीय चुनाव की तरह लड़ी, जिसमें प्रधानमंत्री को मुख्य चेहरा बनाया, भाजपा का ध्यान साम्प्रदायिक मुद्दों पर रहा, जो कर्नाटक में काम नहीं आता है और कुछ जातिगत समीकरण जो भाजपा के खिलाफ गए। कुछ लोग कहते हैं कि इससे बदलाव की बयार दिख रही है, कांग्रेस का उदय और 2024 में भाजपा के लिए चुनौतियां दिख रही हैं। पहले कर्नाटक को समझते हैं। पहली नजर में भाजपा की हार के सभी कारण सही लग रहे हैं। हालांकि, वास्तविक मतदान के आंकड़ों को गहराई से समझें तो पाएंगे कि ऊपर दिए कारणों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जा रहा है। कर्नाटक के चुनाव का पहला पहलू यह है कि यह त्रिकोणीय है। तीन पार्टियां हैं- भाजपा, कांग्रेस और जेडी(एस), जो अलग-अलग संयोजनों में एक-दूसरे के खिलाफ लड़ती रही हैं।

त्रिकोणीय मुकाबले में, वोट शेयर में मामूली अंतर से भी नतीजों में भारी बदलाव आ सकता है। 2018 से 2023 के बीच वोट शेयर में हुआ बदलाव देखें। भाजपा का वोट शेयर 36 प्रतिशत बना रहा, कांग्रेस का 38प्रतिशत से 43प्रतिशत हुआ और जेडीएस का 18प्रतिशत से 13प्रतिशत हो गया। लेकिन जीती सीटों में भारी अंतर आया। भाजपा 106 से 66 पर आ गई (40 की गिरावट), कांग्रेस 80 से 135 (55 की बढ़त) पर पहुंच गई और जेडीएस 37 से 19 (18 की गिरावट) सीटों पर आ गई। चुनाव नतीजों पर हो रही चर्चाएं असंगत रूप से आखिर में मिली सीटों की संख्या पर ध्यान केंद्रित कर रही हैं, जो शायद ठीक भी है। अंतत: सीटें ही मायने रखती हैं। विजेताओं का फैसला करने और सरकार बनाने का यही तरीका है।

हिंदू वोटों का ध्रुवीकरण नहीं कर पाया कर्नाटक का हिंदुत्व

कर्नाटक चुनाव के नतीजे आने से पहले राजनीति के ज्यादातर पंडित यह मानकर चल रहे थे कि बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाने का वायदा करके कांग्रेस ने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है। आईपीएल की भाषा में कहा जा रहा था कि कांग्रेस की इस लूज़ बॉल पर छक्के पर छक्के लगेंगे और जीती-जिताई बाजी सांसत में पड़ जाएगी। इस समीक्षा का मतलब यह था कि बजरंग दल और बजरंग बली में समानता स्थापित करके नरेंद्र मोदी कर्नाटक के वोटरों को हिंदू-ध्रुवीकरण की तरफ धकेल देंगे। इसी तर्क को आगे बढ़ाते हुए कहा जा रहा था कि इस तरह के धर्म-आधारित ध्रुवीकरणके लिए लव जिहाद और हिजाब जैसे मुद्दों का इस्तेमाल करके पहले से ही जमीन बन रही थी। कांग्रेस को सतर्क होकर कदम बढ़ाना था। इसमें शक नहीं कि कांग्रेस पुराने मैसूर के मुसलमान मतदाताओं को अपनी ओर खींचने के लिए बजरंग दल पर प्रतिबंध के आश्वासन का इस्तेमाल करना चाहती थी, जो आम तौर पर उसके और जेडीएस के बीच बंट जाते थे। हुआ भी यही। ये मुसलमान मतदाता पहले से ही देवेगौड़ा की पार्टी द्वारा भाजपा के साथ चुनाव-उपरांत गठजोड़ करने के अंदेशे को समझ रहे थे। कांग्रेस के वादे ने ट्रिगर पाइंट का काम किया और उनका तकरीबन 75 प्रतिशत हिस्सा हाथ पर बटन दबाने के लिए तैयार हो गया। इसका जवाब कन्नड़ समाज की संरचना और कर्नाटक के तटीय इलाकों में हिंदुत्ववादी विचारधारा के प्रसार में देखा जाना चाहिए। संघ के प्रयासों से तटवर्ती कर्नाटक भगवा जरूर हो गया, लेकिन उसकी राजनीतिक अभिव्यक्तियां कभी गुजरात या यूपी जैसे कट्टरपंथी हिंदुत्व में नहीं हुईं। येदियुरप्पा लिंगायत समाज के अभी तक के सबसे बड़े जननेता माने जाते हैं, पर वे भाजपा के अंदर सक्रिय कट्टरपंथी लॉबी से कभी सहमत नहीं रहे। इस चुनाव के शुरुआती दौर में भी अखबारों को एक इंटरव्यू देकर उन्होंने हिजाब जैसी मुहिमों के प्रति अपनी नापसंदगी जाहिर की थी। भाजपा छोड़ कर गए जगदीश शेट्टार भी इसी तरह के लिंगायत नेता रहे हैं। कट्टरपंथी लॉबी बी.एल. संतोष कुमार और टी.एस. रवि (जो बुरी तरह से चुनाव हार गए) के नेतृत्व में इन लिंगायत नेताओं को हमेशा परेशान करती रही। लिंगायतों के बीच हिंदुत्ववादी विचारधारा का असर कितना कमज़ोर था, इसका पता इस बात से लगाया जा सकता है कि जैसे भाजपा आलाकमान ने किसी लिंगायत को सीएम का चेहरा बनाने से इन्कार किया, वैसे ही उन्होंने अपनी मतदान-प्राथमिकताओं पर पुन-विचार करना शुरू कर दिया।

हालांकि कर्नाटक में क्या हुआ, यह समझने के लिए वोट शेयर की गहराई में जाना होगा। भाजपा का वोट शेयर (36प्रतिशत) 2018 के बराबर रहा।

क्या इससे लोकप्रियता में कमी, भ्रष्ट छवि और सत्ता विरोधी लहर दिखती है? क्या इसका मतलब है कि कर्नाटक में पार्टी की विचारधारा को अस्वीकार कर दिया गया है? पिछली बार इसी वोट शेयर के साथ भाजपा सौ से ज्यादा सीटें हासिल करने में कामयाब रही थी। उसकी विजेता के रूप में सराहना की गई थी। उसी वोट शेयर के साथ इस बार सीटों की संख्या कम हो गई और 'कर्नाटक में भाजपा को नकार दिया गया' की थ्योरी के बीज फूट पड़े हैं! अगर वोट शेयर बरकरार है तो इतनी सीटें क्यों गंवानी पड़ीं? इसका जवाब है एकमात्र सबसे बड़ा कारण, जिसने चुनाव पर असर डाला। यह है जेडीएस का निरंतर पतन। जेडीएस का वोट शेयर 18 प्रतिशत से घटकर 13प्रतिशत हो गया, यानी 5प्रतिशत गिरावट। वहीं कांग्रेस का वोट शेयर 38 प्रतिशत से बढ़कर, 43प्रतिशत पर पहुंच गया, यानी 5प्रतिशत की ही बढ़त!

जेडीएस की लोकप्रियता पर असर

जेडीएस का शेयर क्यों गिरा? यह एक वाजिब सवाल है, जिसका अलग से विश्लेषण करने की जरूरत है। हालांकि इसका राष्ट्रीय शैली में चुनाव लड़ने, स्थानीय नेतृत्व में खराब समन्वय होने या चुनाव विश्लेषण के नाम पर जो भी सूचियां बनाई जा रही हैं, उनसे बहुत कम लेना-देना है। जेडीएस की गिरावट का एक ट्रेंड रहा है। लोग पार्टी को राज्यव्यापी क्षेत्रीय पार्टी के विकल्प के रूप में नहीं देखते हैं। इसे अवसरवादी माना जाता है (इसने कांग्रेस और भाजपा दोनों के साथ सरकारें बनाईं, सबसे बड़ी पार्टी का दर्जा न होने के बावजूद इसके नेता मुख्यमंत्री बने)। इसमें एक ही परिवार का ज्यादा प्रभाव है। इसे एक ही जाति, वोक्कालिगा का समर्थन ज्यादा मिला है। जेडीएस के साथ इन समस्याओं के कारण वोटों का कुछ हिस्सा आंशिक रूप से कांग्रेस के पक्ष में चला गया होगा। ऐसी संभावना है कि मुस्लिमों के वोट भी जेडीएस से कांग्रेस की ओर चले गए क्योंकि वे इस बार भाजपा को बाहर रखने के लिए एकजुट हुए। इस लिहाज से बेशक, भाजपा के बजरंग दल जैसे मुद्दों पर ध्यान देने से ये सकता है कि मुस्लिम वोट कांग्रेस के पक्ष में चले गए हों।

पहले से तैयार थी कांग्रेस : बोम्मई

कर्नाटक विधानसभा चुनाव में इस बार कांग्रेस ने जीत दर्ज की है। कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई, जिन्होंने विधानसभा चुनावों में भाजपा के अभियान का नेतृत्व किया, कांग्रेस ने अपना प्रचार अभियान जल्दी शुरू कर दिया और राज्य में भाजपा का संदेश गड़बड़ा गया। यह पूछे जाने पर कि नतीजों से क्या सीख मिली, बोम्मई ने कांग्रेस की जीत के तीन कारण बताए. उन्होंने कहा, लोग मुफ्त उपहारों के बहकावे में आ गए, फिर, व्यक्तिगत रूप से मुझे लगता है कि कांग्रेस अधिक संगठित थी, कांग्रेस ने अपनी तैयारी काफी पहले से शुरू कर दी थी, जैसा आमतौर पर भाजपा करती थी। हमने अपने फैसले थोड़ी देर से लिए, देर से काम किया। अंत में, हालांकि भाजपा सरकार ने बहुत सारे कार्यक्रम आयोजित किए, लेकिन सही संदेश लोगों तक नहीं गया (सरकार के) बड़े फैसले लोगों तक नहीं पहुंचे। बोम्मई ने कहा कि भाजपा खेमे में स्थिति में सुधार होने में कुछ महीने लगेंगे। मैं कर्नाटक में भाजपा की हार की जिम्मेदारी लेता हूं, एक नेता को जिम्मेदारी लेनी चाहिए,तभी चीजें आगे बढ़ सकती हैं,बड़ी बात यह है कि हमें पार्टी को लोकसभा चुनाव के लिए काफी पहले तैयार करना होगा।

भाजपा के नए प्रशंसक नहीं बढ़े

इससे भाजपा के नए प्रशंसक नहीं बढ़ पाए यानी कि उसका वोट शेयर नहीं बढ़ा। उधर वोक्कालिगा और मुस्लिम वोट के कांग्रेस के पक्ष में जाने से वोट शेयर में जो थोड़ा भी बदलाव आया, वह इस त्रिकोणीय चुनाव के नतीजों को प्रभावित करने के लिए काफी था।क्या इसका मतलब यह है कि इन नतीजों का संबंध भाजपा और कांग्रेस, और उनके स्थानीय/राष्ट्रीय नेताओं से बिल्कुल नहीं है? ऐसा नहीं है, सबकी अपनी भूमिका होती है। वोट शेयर को बरकरार रखना भी आसान नहीं होता। हालांकि कोई तर्क दे सकता है कि भाजपा सत्ता में होने के बावजूद इस बार एक गैर-गठबंधन जीत सुनिश्चित करने के लिए ठोस कदम नहीं उठा सकी। वहीं कांग्रेस ने खुद को एक ऐसे असली विकल्प के रूप में पेश किया, जिसे पूर्ण बहुमत मिल सकता है। हो सकता है, इस वजह से भी जेडीएस के वोट कांग्रेस के हिस्से मे आए हों।

कांग्रेस ने भी 40 से ज्यादा लिंगायत उम्मीदवार उतारे

कांग्रेस ने भी 40 से ज्यादा लिंगायत उम्मीदवारों को मैदान में उतारा है। इसका परिणाम यह निकला कि लिंगायत मतदाताओं के वोट अच्छी-खासी संख्या में कांग्रेस के खाते में चले गए। इसने भाजपा के मुख्य जनाधार को तोड़ दिया। संघ ने कर्नाटक के विश्वविद्यालयों के छात्रसंघों में अपना दबदबा कायम करके हिंदुत्व की राजनीतिक सफलता की शुरुआत की थी। लेकिन अगर आज इन्हीं विश्वविद्यालय के परिसरों में जाकर भाजपा समर्थक छात्राओं से पूछा जाए तो वे कहेंगी कि मुसलमान छात्राओं को भी शिक्षा प्राप्त करने का हक है, और अगर वे हिजाब पहनकर आना चाहती हैं तो इसमें कोई बुरी बात नहीं है। भाजपा ने ओल्ड मैसूर के इलाके में यह प्रचार करने की पूरी कोशिश की कि टीपू सुल्तान की मृत्यु किसी अंग्रेज की तलवार से नहीं बल्कि एक वोक्कालिगा की तलवार से हुई थी। लेकिन उसकी एक न चली। वोक्कालिगा और मुसलमान मतदाताओं के बीच के सामाजिक संबंध खराब नहीं हुए। वे जानते थे कि अंग्रेजों ने जो नरसंहार किया था, उसमें मुसलमानों के साथ वोक्कालिगाओं का खून भी बहा था। कर्नाटक के हिंदू मुसलमान-विरोधी ध्रुवीकरण के लिए तैयार नहीं थे। उल्टे भाजपा के रणनीतिकारों को डर था कि कहीं हिंदू समुदायों में लिंगायत विरोधी ध्रुवीकरण न हो जाए। इसी डर से अमित शाह ने कहा था कि अगर भाजपा ने किसी लिंगायत को सीएम का चेहरा घोषित कर दिया तो उसके खिलाफ गैर-लिंगायत एकजुट हो जाएंगे।प्रधानमंत्री ने मंच से जय बजरंगबाली के नारे खूब लगाए। भाजपा नेता आखिरी दिन तक हनुमान चालीसा का पाठ करके हिंदू गोलबंदी की कोशिश करते रहे। पर जिन मुद्दों की चली- वे महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और कुशासन के थे। कर्नाटक के चुनाव नतीजों ने बता दिया कि महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और कुशासन के मुद्दे महज स्थानीय नहीं हैं। इन्हीं मुद्दों पर भाजपा हिमाचल और दिल्ली की महानगरपालिका में हार चुकी है। इससे यह भी साफ हुआ कि भाजपा हर चुनाव प्रधानमंत्री के भाषणों और अमित शाह के प्रबंधन के दम पर नहीं जीत सकती।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

मेडिकल सेवा से जुड़े लोगों की सुरक्षा जरूरी

केरल सरकार ने स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में काम करने वालों को दी राहत, सुरक्षा के लिए अध्यादेश को दी मंजूरी। पिछले सप्ताह राज्य में एक युवा डॉक्टर की नृशंस हत्या कर दी गई थी। डॉक्टरों स्वास्थ्य कर्मियों और मेडिकल छात्रों की सुरक्षा के उद्देश्य से एक अध्यादेश को मंजूरी दी। अध्यादेश के तहत कानून के तहत संरक्षण पैरामेडिकल छात्रों को भी बढ़ाया जाएगा।

डॉक्टरों की सुरक्षा जरूरी है। उन्हें धरती का भगवान कहते हैं। कई राज्यों में उनको राहत देने के लिए कानून बनाए गए हैं। यूपी, राजस्थान जैसे राज्यों में कानून पहले से है। अब केरल ने भी ऐसा कानून बनाने का फैसला किया है। ये एक अच्छी पहल है। कई बार ऐसा होता है कि चिकित्सकों से नाराजगी पर मरीजों के तीमारदारों द्वारा अस्पतालों में तोड़फोड़ किया जाता है कभी-कभी बात इतनी बढ़ जाती है कि नौबत मारपीट तक पहुंच जाती है। ऐसी घटनाओं पर लगाम कसने के लिए और सख्त कानून बनाने की जरूरत है। केरल सरकार ने स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में काम करने वालों को दी राहत, सुरक्षा के लिए अध्यादेश को दी मंजूरी। पिछले सप्ताह राज्य में एक युवा डॉक्टर की नृशंस हत्या कर दी गई थी। डॉक्टरों स्वास्थ्य कर्मियों और मेडिकल छात्रों की सुरक्षा के उद्देश्य से एक अध्यादेश को मंजूरी दी। अध्यादेश के तहत कानून के तहत संरक्षण पैरामेडिकल छात्रों को भी बढ़ाया जाएगा।

एक सरकारी बयान में कहा गया है कि केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन की अध्यक्षता में हुई एक कैबिनेट बैठक में केरल स्वास्थ्य देखभाल सेवा कर्मियों और स्वास्थ्य देखभाल सेवा संस्थानों (हिंसा और संपत्ति को नुकसान की रोकथाम) संशोधन अध्यादेश, 2012 को मंजूरी दी गई है। मौजूदा असंशोधित कानून में पंजीकृत और अनंतिम रूप से पंजीकृत चिकित्सक, पंजीकृत नर्स, मेडिकल छात्र, नर्सिंग छात्र और स्वास्थ्य संस्थानों में कार्यरत पैरामेडिकल स्टाफ शामिल हैं। अध्यादेश के तहत, कानून के तहत संरक्षण पैरामेडिकल छात्रों को भी बढ़ाया जाएगा। बयान में ये भी कहा गया है कि पैरामेडिकल स्टाफ, सुरक्षा गार्ड, प्रबंधकीय कर्मचारी, एम्बुलेंस चालक, सहायक जो स्वास्थ्य देखभाल संस्थानों में तैनात और काम कर रहे हैं और समय-समय पर आधिकारिक सरकारी गजट में अधिसूचित स्वास्थ्य कार्यकर्ता भी अध्यादेश में शामिल होंगे। अध्यादेश के तहत, किसी भी स्वास्थ्य कार्यकर्ता या पेशेवर को गंभीर शारीरिक नुकसान पहुंचाने का दोषी पाए जाने पर 1 साल से 7 साल तक की कैद की सजा होगी और उस पर 1 लाख रुपए से लेकर 5 लाख रुपए तक का जुर्माना लगाया जाएगा। इसमें कहा गया है कि अध्यादेश यह भी प्रदान करता है कि कोई भी व्यक्ति जो स्वास्थ्य कर्मियों या स्वास्थ्य संस्थानों में काम करने वालों के खिलाफ हिंसा करता है या करने का प्रयास करता है या उकसाता है या प्रेरित करता है, उसे कम से कम 6 महीने और 5 साल तक की कैद की सजा के साथ 50,000 रुपए से 2 लाख रुपए के बीच जुर्माना भी देना होगा। अध्यादेश को अब केरल के राज्यपाल की मंजूरी के लिए भेजा जाएगा।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

ट्रिपल इंजन के नारे पर लगी मोहर

विवेक शुक्ला

कर्नाटक विधानसभा चुनाव के नतीजों की चर्चा और समीक्षा करने में मीडिया का एक हिस्सा इतना व्यस्त हो गया कि उसने उत्तर प्रदेश के निकाय चुनावों के एकतरफा नतीजों को नजरअंदाज कर दिया है। यह सच में हैरान करने वाली स्थिति है। उत्तर प्रदेश में भाजपा का प्रदर्शन शानदार रहा। कुल 17 नगर निगमों में पहली बार पार्टी पूर्ण बहुमत से विजय प्राप्त करने में सफल हुई। इन चुनावों को 2024 के लोक सभा चुनावों के पहले महत्वपूर्ण मिनी चुनाव के रूप में देखा जा रहा था। भाजपा की इस जीत का श्रेय योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व को दिया जाना चाहिए। उत्तर प्रदेश के जिन 17 नगर निगमों में भाजपा को जीत मिली, वे हैं- अयोध्या, झांसी, बरेली, मथुरा-वृंदावन, मुरादाबाद, सहारनपुर, प्रयागराज, अलीगढ़, शाहजहांपुर, ग़ाज़ियाबाद, आगरा, लखनऊ, कानपुर, मेरठ, फ़िरोज़ाबाद, वाराणसी और गोरखपुर।

योगी आदित्यनाथ ने 50 से अधिक जनसभाएं कर पार्टी के लिए चुनावी ज़मीन तैयार की थी। नि:संदेह इस चुनाव में जितनी मेहनत योगी आदित्यनाथ ने की है, उतनी मेहनत विपक्षी दल के किसी नेता ने नहीं की है। सारी सीटों को योगी आदित्यनाथ ने प्रतिष्ठा का प्रश्न बना रखा था। मसलन, अयोध्या सीट उनके लिए बहुत मायने रखती थी। अयोध्या में विकास कार्यक्रमों के लिए हुई तोड़-फोड़ की वजह से आशंका थी कि कहीं वे न चूक जाएं। अयोध्या ही ऐसा नगर निगम था जहां वे दो बार चुनाव के प्रचार के लिए गए। योगी आदित्यनाथ ने ट्रिपल इंजन की सरकार का नारा भी दिया था जिसमें उन्होंने देश, प्रदेश और शहर तीनों जगह भाजपा के शासन का मॉडल जनता के सामने रखा था। दरअसल, उत्तर प्रदेश में विपक्ष के बिखराव की तस्वीर साफ है। मतों के लिहाज से प्रदेश में अपनी प्रभावी उपस्थिति रखने वाली समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के बीच सुलह की संभावना दूर-दूर तक नजर नहीं आती। लोकदल का असर कुछ जिलों में ही है।

अन्य पिछड़ा वर्ग की राजनीति करने वाले बाकी दल भाजपा के खेमे में आनंद से समय गुजार रहे हैं। इधर, राज्य में कांग्रेस का जनाधार लगभग समाप्त हो चुका है। वहीं प्रधानमंत्री के तौर पर नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता के अलावा उत्तर प्रदेश में योगी की सख्त शासन शैली और भ्रष्टाचार मुक्त कार्यशैली का मॉडल लोग पसंद भी कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश में सड़कों का मजबूत जाल, एक्सप्रेस-वे,

जनकल्याण योजनाएं, भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस की नीति और रोजगार सृजन की योजनाबद्ध नीति आदि कुछ ऐसे कदम हैं, जिनके दम पर उत्तर प्रदेश आज उद्योग प्रदेश बनने की दिशा में प्रयासरत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गत 10 फरवरी को जब यूपी ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-23 का शुभारंभ करने लखनऊ पहुंचे थे, तो उन्होंने देश-दुनिया के सामने प्रदेश की बदली छवि को प्रस्तुत करते हुए कहा था कि आज उत्तर प्रदेश आशा और प्रेरणा का स्रोत बन गया है। यह भी कि अब उत्तर प्रदेश की पहचान सुशासन, बेहतर कानून-व्यवस्था और स्थिरता से होती है, तो इसके पीछे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में सामाजिक-आर्थिक रूप से हो रहा बदलाव है। इस इन्वेस्टर्स समिट के माध्यम से प्रदेश में रिकॉर्ड 31 लाख करोड़ रुपये के निवेश के प्रस्ताव प्राप्त हुए। कई अर्थशास्त्रियों का भी मानना है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में यूपी आज भेदभाव, जातिवाद और क्षेत्रवाद की सियासत से निकलकर सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास की नीति पर चलते हुए समग्र व संतुलित विकास की दिशा में बढ़ रहा है। यूरोप और अमेरिका से हो या खाड़ी देशों से, हर बड़ा निवेशक जो भारत में निवेश करने को इच्छुक है, उत्तर प्रदेश उसकी पसंदीदा जगहों में शामिल है। इसका बड़ा कारण मौजूदा शासनकाल में प्रदेश में निवेशकों को मिलने वाला सुरक्षित और भ्रष्टाचार मुक्त माहौल है। योगी सरकार ने हाल ही में वर्ष 2023-24 के लिए करीब 690,242.43 करोड़ रुपए का बजट पेश कर प्रदेश को नयी शक्ल और मजबूती देने का प्रयास किया है। ऐसे में देखना होगा कि विभाजित विपक्ष आगामी लोकसभा चुनाव में योगी के इस मजबूत किले में सेंध लगा पाने की हिम्मत भी जुटा पाता है या नहीं।

उत्तर प्रदेश में भाजपा की जीत के कई अन्य फैक्टर भी रहे। उदाहरण के तौर पर नए मेडिकल कॉलेज खोलना, हाईवे समेत अन्य इंफ्रास्ट्रक्चर एवं चौतरफा विकास शामिल हैं। पर, सबसे ज्यादा जोर अपराधियों के खिलाफ एक्शन पर दिया। पूरे चुनाव में 'माफियाओं को मिट्टी में मिला देंगे' वाला बयान सर्वाधिक चर्चा में रहा। उमेश पाल हत्याकांड के बाद यूपी सरकार का बुलडोजर एक्शन से लेकर शूटर्स का एनकाउंटर हो या माफिया पर कार्रवाई- भाजपा ने इन घटनाओं को इस सकारात्मक अंदाज में पेश किया जैसे योगी सरकार में ही यह संभव था।

पाकिस्तान की अस्थिरता में संभावना तलाशता चीन

जी. पार्थसारथी

वर्ष 1982 में एक पाकिस्तानी पत्रकार ने जब इमरान खान से खासतौर पर भारत के खिलाफ खतरनाक गेंदबाज़ी करने की वजह पूछी तो उस वक्त के कप्तान इमरान ने दृढ़तापूर्वक कहा, 'जब भी मैं भारत के विरुद्ध खेलता हूं तो इसे जिहाद की तरह लेता हूं।' हालांकि उनकी कप्तानी के दिनों के बाद से क्रिकेट जगत में बहुत-सा बदलाव आ चुका है। वैसे इन दिनों इमरान की यह जिहादी प्रवृत्ति भारत की बजाय अब पाकिस्तानी सेना के खिलाफ ज्यादा हुई लगती है! जाहिर है इमरान खान का मौजूदा गुस्सा इसलिए है क्योंकि तत्कालीन सेनाध्यक्ष जनरल बाजवा के कुपित होने की वजह से संसद में उनका बहुमत जाता रहा। बाजवा के विरुद्ध दुराव रखने के पीछे इमरान के कारण सही हो सकते हैं। माना जाता है कि जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर, पर्दे के पीछे, भारतीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल से चली गंभीर मंत्रणाओं के लिए जनरल बाजवा मुख्य सूत्रधार थे। यह ऐसा वक्त था जब सीमापारीय आतंकवाद की घटनाएं लगभग थम गई थीं।

हालांकि वर्तमान में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर आतंकवाद जारी है, जैसा कि हाल ही में राजौरी में हुआ है, अब यह स्पष्ट दिखने लगा कि अपने पुराने रंग-ढंग में पूरी तरह लौटने के लिए पाकिस्तान को कुछ वक्त लगा। क्योंकि कहावत है कि 'पुरानी आदतें मुश्किल से छूटती हैं।' इससे ज्यादा, भारत के पास भी विकल्प है कि पाकिस्तान की आतंकवाद को संरक्षण देने वाली करतूतों की प्रतिक्रिया ठीक उसी रूप में करे, तभी तो कहते है: 'जो खुद शीशे के घरों में रहते हैं, वे दूसरों पर पत्थर नहीं फेंकते।' बृहद आयाम में, पाकिस्तान में मौजूदा स्थिति का आलकन करते वक्त यह जहन में रखना होगा कि कैसे पाक ने खुद को आर्थिक दलदल में धकेला है। पाकिस्तान का विदेशी मुद्रा भंडार इतना कम हो चुका है कि फिलहाल महीने भर की आवश्यक वस्तुएं आयात करने तक की मुद्रा नहीं है। मित्र देशों से सहायतार्थ विदेशी मुद्रा का प्रवाह भी निरंतर नहीं हो पा रहा, इसमें अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से क्लीन चिट न मिलने की वजह से अड़चनें बनी हुई हैं, महीनों से स्थिति यही है।

अमेरिका का भी दबाव है कि अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से नियमों की पालना का सत्यापना पत्र पाने से पहले पाकिस्तान अपनी सभी प्रतिबद्धताएं पूरी कर दिखाए, तभी आगे सहायता राशि जारी हो पाएगी। जो भी है, लगता है कि अमेरिकियों के मन में आर्थिक नीतियों पर पाकिस्तानी वायदों पर भरोसा करने को लेकर शक है। सबसे महत्वपूर्ण यह कि अमेरिका को इमरान खान की नीतियों को लेकर गंभीर चिंता है, जबकि फिलहाल लग रहा है कि आगामी आम चुनाव में सत्ता की दौड़ में वे सबसे आगे हैं। वैसे इमरान खान लंबे समय से भारत के प्रति अमित्रतापूर्ण रवैया रखते आए हैं। पाकिस्तानियों को अब अपने राजनीतिक नेतृत्व और सैनिक तानाशाहों की अक्षमताओं की भारी कीमत चुकानी पड़ रही है, यह फील्ड मार्शल अयूब खान के वक्त से हो रहा है। हालांकि सेना के शासन में कुछ मौके ऐसे रहे जब सैन्य तानाशाह का हृदय परिवर्तन हुआ हो जैसा कि जनरल मुशर्रफ ने किया था।

जब कारगिल में किए दुस्साहस की भूल से सही सबक लेते हुए उन्होंने जम्मू-कश्मीर मुद्दे का उचित, परस्पर स्वीकार्य, वास्तविक एवं व्यावहारिक हल निकालना चाहा। अब बिलावल भुट्टो जैसे युवा किंतु अपरिपक्व और अति-उत्साही मंत्री हमें देखने को मिल रहे हैं, जिन्हें यह तक नहीं पता कि क्या बोलना चाहिए। काश! बिलावल भुट्टो सिर्फ यही याद कर लें कि उनकी माता बेनज़ीर भुट्टो और नाना जुल्फिकार अली भुट्टो ने भारत से संबंधों में कौन-सी लीक अपनाई थी। भारत के विरुद्ध पाकिस्तान को भड़काकर वैमनस्य बनाए रखने के पीछे मुख्य विदेशी ताकत चीन ही है। लंबे समय से चीन भारत के खिलाफ दुश्मनी रखने को पाकिस्तान को शह देता आया है। इसकी प्राप्ति के लिए उसने पाकिस्तान के रिवायती, परमाणु और मिसाइल क्षमता को मजबूत बनाया है। चीन की इस प्रवृत्ति के सुबूत भारत के आस-पास के क्षेत्र में मल्लका जलडमरू से लेकर होरमुज की खाड़ी तक स्पष्टत: दिखाई देते हैं। चीन अब इस बात पर दृढ़-संकल्प है कि उस पर रूस की निर्भरता उत्तरोत्तर बढ़ती जाए और वह भारत और पाकिस्तान को लेकर रूसी नीतियों को प्रभावित कर सके। यूक्रेन को हथियार पहुंचाने में- जाहिर है अमेरिका के कहने पर- पाकिस्तानी लिप्तता को लेकर रूस उससे खासा खफा था।

पाकिस्तान की इस नीति के पीछे ज्यादातर प्रभाव अमेरिका-परस्त जनरल बाजवा का था। परंतु रूस पर चीन अब किस कदर हावी है, यह तब साफ हो गया जब रूस ने अचानक अपनी नीतियों में बदलाव करते हुए पाकिस्तान को तेल आपूर्ति का दरवाजा खोल दिया और दाम भी भारत से लिए भाव के बराबर। रूस में आया बदलाव रक्षा मंत्री सरगई शोइगू की गोवा में संपन्न हुई शंघाई सहयोग संगठन की बैठक में दिए बयानों से भी झलकता है। शोइगू ने 'क्वाड' और 'ऑक्स' जैसे संगठनों की जमकर आलोचना की- जिनका सदस्य भारत भी है और कहा कि इनकी स्थापना का मसकद चीन को सीमित करना है। साफ है रूस ने अब हिंद-प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में चीन की इलाकाई महत्वाकांक्षा को समर्थन देना चुन लिया है। शोइगू के इस बयान के साथ ही भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और विदेश मंत्री जयशंकर ने स्पष्टवादी शब्दों में सीमा संबंधी समझौतों की चीन द्वारा उल्लंघना पर ध्यान दिलाया।

आंखों की रोशनी बढ़ाने के लिए करें ये योगासन

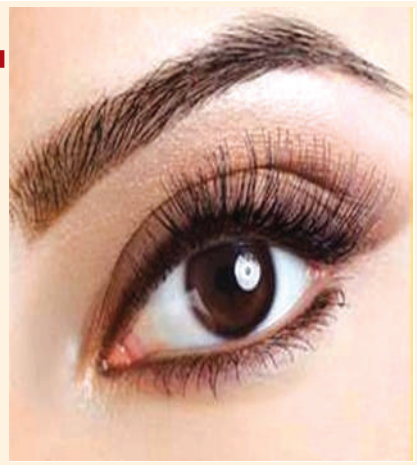

गलत खानपान, मोबाइल या कंप्यूटर स्क्रीन पर अधिक समय बिताने और आंखों को आराम न देने के कारण कम उम्र से ही लोगों को नजर कम होने की समस्या हो सकती है। उम्र बढ़ने के साथ आंखों की तमाम बीमारियां और रोशनी कम होना आम समस्या है लेकिन अब छोटे बच्चों में आंखों की समस्या बढ़ने लगी है, जो कि चिंताजनक है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, सभी को हमेशा आंखों की सेहत का ख्याल रखना जरूरी है। आंखों की सेहत के लिए जीवनशैली में सुधार और पौष्टिक आहार का सेवन करना चाहिए। साथ ही दिनचर्या में कुछ प्रकार के योगासनों को शामिल करने की आदत भी बनाएं। कई तरह की शारीरिक समस्याओं के साथ ही योग आंखों के लिए भी फायदेमंद है। योग विशेषज्ञों के मुताबिक, अगर आप में आंखों की बीमारियों की शुरुआत है तो रोजाना योग का अभ्यास करना चाहिए। इससे आंखों की रोशनी तेज होती है और चश्मा लगाने से बचा जा सकता है।

चश्मा लगाने की नहीं पड़ेगी जरूरत

अनुलोम-विलोम प्राणायाम

प्राणायाम के दैनिक अभ्यास से संपूर्ण शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है। नियमित अनुलोम विलोम प्राणायाम का अभ्यास अवरूद्ध ऊर्जा चैनलों (नाड़ियों) को साफ करने और मन को शांत रखने में सहायक है। तंत्रिकाओं को राहत दिलाने और दृष्टि में सुधार के साथ ही त्वचा को स्वस्थ बनाने के लिए अनुलोम विलोम प्राणायाम का नियमित अभ्यास करना चाहिए।

सर्वांगासन योग

आंखों की सेहत के साथ ही रक्त संचार को ठीक रखने के लिए सर्वांगासन के अभ्यास की आदत बनाएं। सर्वांगासन के नियमित अभ्यास से मस्तिष्क और ऑप्टिक नर्व्स में रक्त परिसंचरण को बढ़ावा मिलता है। वहीं आंखों को आराम देने के साथ मस्तिष्क को भी स्वस्थ बनाता है।

हलासन योग का लाभ

पीठ-कमर से लेकर रक्त के परिसंचरण को ठीक बनाए रखने के लिए हलासन योग का अभ्यास लाभकारी माना जाता है। हलासन शरीर के ऊपरी हिस्से में रक्त के संचार को बढ़ावा देने में मदद करता है जिसके कारण आंखों को स्वस्थ रखा जा सकता है। नियमित तौर पर इस योग के अभ्यास से वृद्धावस्था तक आंखों की रोशनी को बेहतर बनाए रखा जा सकता है। वहीं तंत्रिका तंत्र को शांत करने और इससे संबंधित विकारों के जोखिम को कम करने में भी हलासन लाभकारी है।

बिना कसरत किए घटाएं अपना वजन

क्या आप भी अपनी लाइफस्टाइल नहीं बदल पा रहे हैं? क्या आपका वजन बढ़ रहा है? क्या आप भी वजन कम करने के लिए तमाम तरह के जतन कर रहे हैं, लेकिन कोई नतीजा नहीं मिल रहा? वजन घटाने के लिए डाइटिंग का ले रहे हैं सहारा? वजन कम करना तो चाहते हैं, लेकिन तमाम कोशिश के बावजूद कसरत नहीं कर पाते? तो इसका पहला तरीका है कि दिन में आप चाहे दो बार खाना खाते हों या तीन बार। आपको बस अपना खाना खाने के बाद 20 मिनट के लिए बिल्कुल आराम से टहलना है। अपने घर में ही टहल लें। खाना खाने के बाद नियम बना लीजिए कि 20 मिनट के लिए आराम से टहलना ही टहलना है। इसके लिए मोबाइल या घड़ी में 20 मिनट का टाइमर लगा लें। चाहें तो ईयरफोन लगाकर या ऐसे ही टहलने लगें। बस ध्यान इतना रखना है कि दिन में हर बार खाना खाने के बाद इसे करना ही है। जबकि दूसरा तरीका है कि जब भी खाना खाएं, कमर को सीधा रखकर खाएं। कभी भी झुककर या आराम की मुद्रा में बैठकर खाना नहीं खाना चाहिए। कमर को सीधे रखकर खाने से भूख कम लगती है, जबकि आराम से या झुककर बैठने से भूख ज्यादा लगती है। कभी भी खाना खाने के बाद सोफा-कुर्सी, बिस्तर पर ना जाएं। रात का खाना शाम सात बजे से पहले ही खाने की आदत डाल लें।

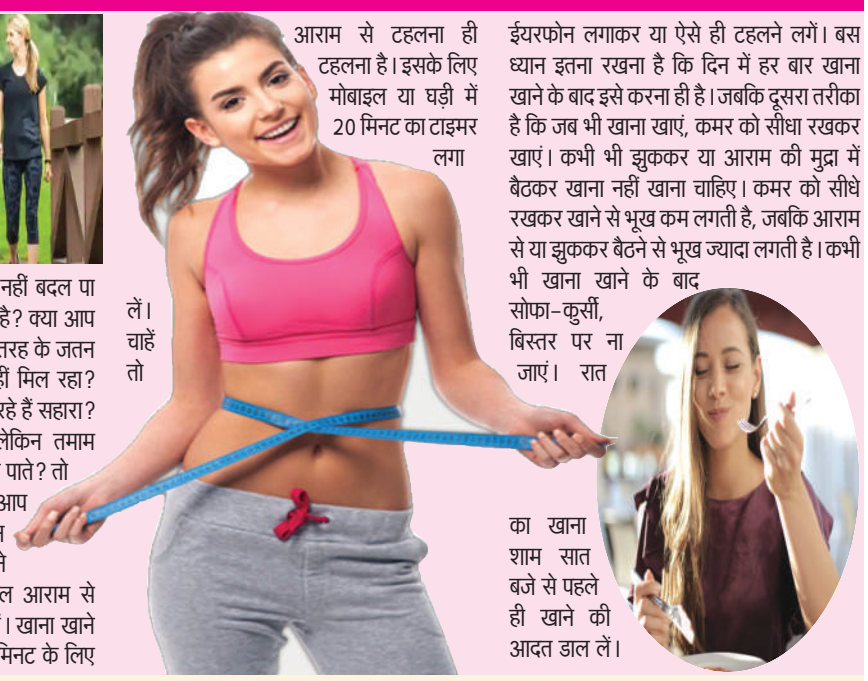

हंसना मना है

एक लड़की एक लड़के के साथ बैठी थी, दूसरे दिन दूसरे लड़के के साथ बैठी थी, तीसरे दिन तीसरे लड़के के साथ बैठी थी, इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है? लड़के बदल जाते हैं पर लड़कियां नहीं।

महिला- डॉक्टर साहब, मेरे पति नींद में बातें करने लगे हैं! क्या करूं? डॉक्टर- उन्हें दिन में बोलने का मौका दीजिए!

टीटी ने चिंटू को प्लेटफॉर्म पर पकड़ लिया, टीटी- टिकट दिखा, चिंटू- अरे मैं ट्रेन में आया ही नहीं, टीटी- क्या सबूत है? चिंटू- अबे सबूत यही है कि मेरे पास टिकट नहीं है।

पत्नियां बहुत समझदार होती हैं.... दूसरो के सामने अपने पति को कभी सीधे बेवकूफ नहीं बोलती हैं... बल्कि घुमाकर कहती हैं...अरे इनको तो कुछ पता ही नहीं है.... बहुत सीधे-सादे हैं दुनियादारी की समझ ही नहीं है।

कहानी — बंदर और लकड़ी का खूंटा

एक समय की बात है, जब शहर से थोड़ी दूर में एक मंदिर बनाया जा रहा था। उस मंदिर के निर्माण में लकड़ियों का इस्तेमाल किया जा रहा था। लकड़ियों के काम के लिए शहर से कुछ मजदूर आए हुए थे। एक दिन मजदूर लकड़ी चीर रहे थे। सारे मजदूर रोज दोपहर का खाना खाने के लिए शहर जाया करते थे। उस दौरान एक घंटे तक वहां कोई भी नहीं रहता था। एक दिन दोपहर के खाने का समय हुआ, तो सभी जाने लगे। एक मजदूर ने लकड़ी आधी ही चीर थी। इसलिए, वह बीच में लकड़ी का खूंटा फंसा देता है, ताकि दोबारा चीरने के लिए आरी फंसाने में आसानी हो। उनके जाने के कुछ समय बाद बंदरों का एक समूह वहां आ जाता है। उस समूह में एक शरारती बंदर था, जो वहां पड़ी चीजों को उल्टा-पुल्टा करने लगा। बंदरों के सरदार ने सभी को वहां रखी चीजों को छेड़ने से मना किया। कुछ समय बाद सारे बंदर पेड़ों की तरफ वापस जाने लगे, तो वह शरारती बंदर सबसे बचकर पीछे रह जाता है और उधम मचाने लगता है। शरारत करते-करते उसकी नजर उस अधचिरे लकड़ी पर पड़ती है, जिस पर मजदूर ने लकड़ी का खूंटा लगाया था। खूंटे को देखकर बंदर सोचने लगा कि उस लकड़ी को वहां पर क्यों लगाया है, उसे निकालने पर क्या होगा। फिर वह उस खूंटे को बाहर निकालने के लिए खींचने लगता है। बंदर के अधिक जोर लगाने पर वह खूंटा हिलने और खिसकने लगता है, जिसे देखकर बंदर खुश होता है और जोर लगाकर उस खूंटे को सरकाने लगता है। वह खूंटे को निकालने में इतना मगन हो जाता है कि उसे पता ही नहीं चलता कि कब उसकी पूंछ दोनों पाटों के बीच में आ गई। बंदर पूरी ताकत के साथ खूंटे को खींचकर बाहर निकाल देता है। खूंटा निकलते ही लकड़ी के दोनों भाग चिपक जाते हैं और उसकी पूंछ बीच में फंस जाती है। पूंछ के फंसने पर बंदर दर्द के मारे चिल्लाने लगता है और तभी मजदूर भी वहां पहुंच जाते हैं। उन्हें देखकर बंदर भागने के लिए जोर लगाता है, तो पूंछ टूट जाती है। वह चीखते हुए टूटी पूछ लेकर भागता हुआ अपने झुंड के पास पहुंच जाता है। वहां पहुंचते ही सभी बंदर उसकी टूटी हुई पूंछ देखकर हंसने लगते हैं।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — आज आपका दिन कॉन्फिडेंस से भरा रहेगा। आज कुछ नए दोस्त बनने की संभावना है। आपका सामाजिक दायरा बहुत हद तक बढ़ सकता है।

वृषभ — व्यावसायिक संदर्भ में नए व्यापार संबंधों और सौदों को अंतिम रूप देने के लिए यह एक अनुकूल अवधि है। प्रेम संबंधों के मामले में आप भाग्यशाली रहेंगे।

मिथुन — आज ऑफिस के काम में आपके सामने कई चुनौतियां आने की संभावना है। आपको अपने किसी खास काम में मित्र की मदद मिलेगी। काम समय पर पूरे होंगे।

कर्क — आप एक नई एसोसिएशन या साझेदारी में प्रवेश कर सकते हैं। परिवार और दोस्त खुशी के समय और यादगार अवसरों को मनाने के लिए इकट्ठा होंगे।

सिंह — आज आपको किसी काम से भागदौड़ करनी पड़ सकती है। आपको परिवार वालों का सहयोग मिलेगा। आपको अपने खर्चे को नियंत्रण में रखना चाहिए।

कन्या — व्यावसायिक क्षेत्र में आज आपको बहुत अच्छे परिणाम मिलेंगे। प्रभावशाली लोगों से संपर्क लाभकारी रहेंगे। संपत्ति या वाहन की बिक्री या खरीद संभव है।

तुला — आज माता-पिता अपने बच्चों के साथ कहीं आसपास पिकनिक स्पॉट जायेंगे। बच्चे खुश रहेंगे। आप किसी समारोह में जाने की प्लानिंग करेंगे।

वृश्चिक — लंबे समय से पोषित सपने अब पूरे हो सकते हैं। आपके पिछले प्रयास अब फल देंगे। व्यवसायी व्यवसाय के एक नए क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं।

धनु — आज आपके सारे काम मन-मुताबिक पूरे होंगे। आप अपने बच्चों के साथ खुशी के पल बितायेंगे। पारिवारिक रिश्ते मजबूत होंगे।

मकर — आज रुके हुए कार्यों को आगे बढ़ाने में बहुत मदद मिलेगी। पराक्रम और उत्साह में वृद्धि रहेगी। काम में मन लगेगा और मेहनत के अनुसार परिणाम भी आएगा।

कुम्भ — आज आपका कोई बड़ा काम संतान की मदद से पूरा हो जायेगा। माता-पिता का सहयोग भी बना रहेगा। शाम को उनके साथ किसी धार्मिक स्थल पर जायेंगे।

मीन — आज आपको बहुत सारे विकास दिखाई देंगे। व्यवसाय में वृद्धि और व्यापार में बेहतरी के अवसर मिलेंगे। आर्थिक रूप से आप सुरक्षित रहेंगे।

बॉलीवुड | मन की बात

सबके के लिए नहीं खुलते फिल्म इंडस्ट्री के दरवाजे शहनाज गिल

अभिनेत्री और सोशल मीडिया सेनसेशन शहनाज गिल सलमान खान की किसी का भाई किसी की जान से बॉलीवुड में डेब्यू करने के बाद एक्टिंग की क्लास लेने में व्यस्त हैं। हिंदी सिनेमा में कदम रखने से पहले, शहनाज ने पंजाबी फिल्म इंडस्ट्री में काम किया था। पंजाब की कटरीना के नाम से मशहूर एक्ट्रेस ने जहां बिग बॉस में आकर घर-घर में पहचान बनाई, वहीं अब वह धीरे-धीरे बॉलीवुड में अपने पैर पसार रही हैं। हाल ही में शहनाज ने एक इंटरव्यू में बॉलीवुड के बारे में बात की है। उनका मानना है कि इंडस्ट्री सभी के लिए खुली नहीं है। एक मीडिया संस्थान से बात करते हुए, शहनाज ने खुलासा किया कि उनके लिए चीजें आसान नहीं हैं और वह जो कुछ भी हासिल कर रही है, वह उनकी कड़ी मेहनत का नतीजा है। अभिनेत्री ने कहा, इंडस्ट्री ओपन नहीं होती, ओपन करनी पड़ती है। आपको खुद पर काम करना होगा... अपने आप को बदलें। मेरे लिए कुछ भी खुला नहीं है, मैं जो कर रही हूं, अपनी मेहनत से कर रही हूं। शहनाज का मानना है कि दर्शकों के बीच खुद को एक्टिव बनाए रखने के लिए उन्हें खुद को नए सिरे से बदलते रहने की जरूरत है। शहनाज नहीं चाहतीं कि उनके प्रशंसक उनसे ऊब जाएं। अभिनेत्री ने कहा, अगर आप खुद को वैसे ही पेश करते हैं जैसे आप हैं और अपने दर्शकों को कुछ भी नया नहीं देते हैं, तो वे बोर हो जाएंगे। हम पब्लिक फिगर हैं और अगर हम दर्शकों को अलग-अलग रूप नहीं दिखाएंगे, तो वे हमसे ऊब जाएंगे। यह पहली बार नहीं है जब शहनाज ने इंडस्ट्री में एक्टिव रहने और उसमें जगह बनाने के लिए खुद को बदलने की बात कही है। इससे पहले भी एक यूट्यूब लाइव वीडियो में, उन्होंने यह भी दावा किया कि उसने अपना वजन कम किया क्योंकि एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री केवल पतली लड़कियों को पसंद करती है। वर्कफ्रंट की बात करें तो शहनाज को आखिरी बार जहां सलमान खान स्टारर फिल्म किसी का भाई किसी की जान में देखा गया था, वहीं अभिनेत्री अगली बार रिया कपूर की फिल्म में नजर आएंगी। इसमें उनके साथ अनिल कपूर और भूमि पेडनेकर भी होंगे।

शाहरुख के हाथ से फिसली डान-3

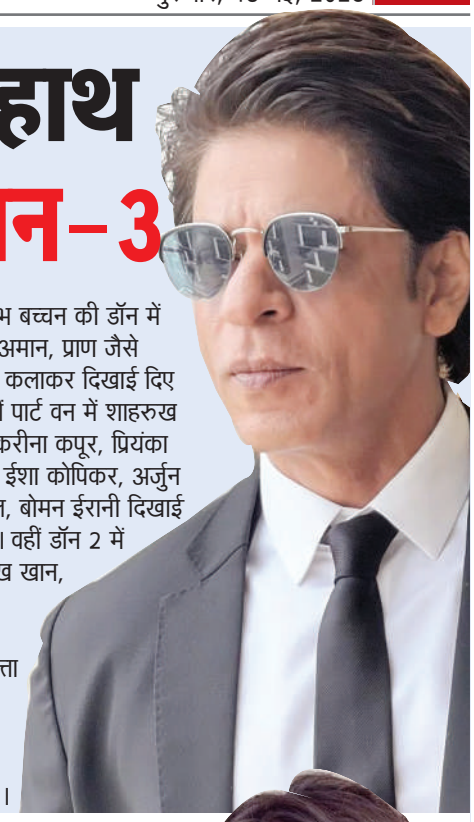

कई महीनों से शाहरुख खान की फिल्म डॉन 3 चर्चा में बनीं हुई है। फिल्म को लेकर तरह-तरह की अपडेट सामने आ रही हैं। बीते दिन फिल्म से जुड़ी शॉकिंग खबर सामने आई, जब फैंस को पता चला कि डॉन 3 में किंग खान नजर नहीं आने वाले है। जहां एक तरफ लोग इस बात से निराश थे, तो वहीं यह भी जानना चाहते थे कि शाहरुख कि जगह फिल्म में कौन लेगा। अब इस बात का भी खुलासा हो गया है। नए डॉन के लिए इस सुपरस्टार का नाम सामने आ रहा है।

भोजपुरी | मसाला

अमिताभ बच्चन के साथ शुरू हुए डॉन के करंवा को शाहरुख खान ने आगे बढ़ाया था। फिल्म में शाहरुख खान का निगेटिव किरदार लोगों को काफी पसंद आया था। लेकिन अब शाहरुख खान ने फिल्म के 3 पार्ट में काम करने से मना कर दिया है। फिल्म समीक्षक सुमित कडेल के अनुसार मेकर्स डॉन 3 के लिए रणबीर सिंह को लेकर विचार कर रहे हैं।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक डॉन 3 में इस बार शाहरुख खान धूम नहीं मचाएंगे। किंग खान ने इस फिल्म को करने से मना कर दिया है। जानकारी के मुताबिक शाहरुख खान के साथ निर्देशक फरहान अख्तर और रितेश सिधवानी ने कई बार बातचीत की थी। कई बार स्क्रिप्टिंग स्टेज तक पहुंचीं। लेकिन अब हाल ही में हुई शाहरुख खान के साथ मीटिंग में एक्टर ने डॉन 3 करने से साफ मना कर दिया।एक्टर सिर्फ कमर्शियल फिल्में करना चाहते हैं, जो यूनिवर्सल अपील वाली हो और उनके लिस्ट में डॉन फिट नहीं हो रही है।

डॉन और इसके पार्ट 1 और 2 में कई ए लिस्टर स्टार्स नजर आ चुके हैं। जहां अमिताभ बच्चन की डॉन में जीनत अमान, प्राण जैसे दिग्गज कलाकर दिखाई दिए थे। वहीं पार्ट वन में शाहरुख खान, करीना कपूर, प्रियंका चोपड़ा, ईशा कोपिकर, अर्जुन रामपाल, बोमन ईरानी दिखाई दिए थे। वहीं डॉन 2 में शाहरुख खान, प्रियंका चोपड़ा, लारा दत्ता जैसे सितारे नजर आए थे।

'कच्चे लिंबू' में सपनों की उड़ान भरती नजर आईं राधिका मदान

राधिका मदान अपनी खूबसूरती के साथ अपनी अदाकारी के लिए भी जानी जाती हैं। अभिनेत्री अपनी हालिया रिलीज वेब सीरीज सास बहू और फ्लेमिंगो को लेकर सुर्खियों में चल रही हैं। रिलीज के बाद से ही इस वेब सीरीज को दर्शकों का काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है।

वेब सीरीज कच्चे लिंबू में राधिका मदान एक जुझारू लड़की के किरदार में नजर आ रही है, जो अपने भाई को चुनौती देती है। ट्रेलर में राधिका के हाथ में बल्ला देखने को मिलता है। अभिनेत्री हाथ में बल्ला उठा लेती हैं और मैदान में निकल पड़ती हैं। इसके बाद ट्रेलर में दिखाया गया है कि राधिका एक टीम बनाती है और लड़ती हैं, लेकिन इसके आगे की कहानी को जानने को लिए फिल्म रिलीज होने का इंतजार करना पड़ेगा।

आपको बता दें कि राधिका की फिल्म कच्चे लिंबू ओटीटी प्लेटफॉर्म पर स्ट्रीम होगी। इस फिल्म को दर्शक 19 मई से अपने मोबाइल, लैपटॉप में देख पाएंगे। यही नहीं, इस फिल्म की 47वें टोरंटो फिल्म फेस्टिवल में स्क्रीनिंग भी हो चुकी है। शुभम योगी के डायरेक्शन में बनी इस फिल्म में राधिका के अलावा आयुष मेहरा और रजत बारमेचा भी लीड रोल में हैं।

वर्क फ्रंट की बात करें तो इससे पहले राधिका अर्जुन कपूर के साथ फिल्म कुत्ते में नजर आई थीं। प्रोजेक्ट्स की बात करें तो राधिका के पास सना, हैप्पी टीचर्स डे जैसी फिल्में भी हैं। इसके अलावा वह अक्षय कुमार के साथ एक तमिल फिल्म में भी नजर आने वाली हैं।

अजब-गजब | सांप से अपने बच्चों को बचाने के लिए नेवला करता है वार

क्या आप जानते हैं सांप और नेवले में क्यों है दुश्मनी, कौन किस पर पड़ता है भारी?

सांप और नेवले को लेकर कई उपमाएं दी जाती हैं। दोनों की दुश्मनी के किस्से बेहद फेमस हैं। हर कोई जानता है कि जब सांप और नेवला आमने सामने होते हैं तो उनके बीच युद्ध होना लाजमी है। पर क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर दोनों के बीच ये दुश्मनी क्यों है? आखिर क्यों दोनों एक दूसरे को पसंद नहीं करते? चलिए विज्ञान के अनुसार इस सवाल का सही जवाब जानने की कोशिश करते हैं।

वेबसाइट forestwildlife.org की रिपोर्ट के अनुसार नेवले और सांप एक दूसरे के दुश्मन इसलिए होते हैं क्योंकि उन्हें प्रकृति ने ही ऐसा बनाया है। ये उनका प्राकृतिक वृत्ति होता है जो दोनों को एक दूसरे का दुश्मन बना देता है। कई तरह के सांप नेवले के बच्चों को अपना भोजन बना लेते हैं और बेहद छोटे बच्चों पर तब हमला कर देते हैं, जब मादा नेवला उस वक्त वहां मौजूद नहीं होती है। ये भी एक कारण है कि नेवले, सांपों से खुद को और बच्चों को बचाने के लिए हमला कर देते हैं। सांप, नेवलों के आहार का अहम हिस्सा होते हैं।

पर सवाल ये उठता है कि दोनों में से जीत किसकी होती है? भारतीय नेवले, जो आपको शहरों या गांवों में आसानी से दिख जाएंगे, बड़े से बड़े सांपों को पछाड़ देते हैं। यहां तक कि दुनिया का सबसे जहरीला सांप, किंग कोबरा भी इन नेवलों का शिकार बन जाता है। नेवले, सांपों की तुलना में इतने तेज होते हैं कि वो सांप के सिर और शरीर के पिछले हिस्से पर घातक प्रहार करते हैं जिससे उनकी मौत हो जाती है। पर कई बार ऐसा भी होता है कि नेवले की भी सांप के हमले में मौत हो जाती है। वो जब सांप को मारकर खाते हैं, तो सांप के दांत उनके पेट में या शरीर के किसी अन्य हिस्से में चुभ जाते हैं जिससे अंदरूनी ब्लीडिंग होने लगती है।

कई बार तो किंग कोबरा जैसा जहरीला सांप भी नेवले को काट देता है पर उसकी मौत नहीं होती। ऐसा इसलिए क्योंकि वो सांप के जहर के प्रति इम्यून रहता है। सांपों के दिमाग में कास न्यूरोट्रांसमिटर होता है जिसे एसिटायलकॉलिन कहते हैं। ये एसिटायलकॉलिन, खून में जहर से मिल जाता है और उसे न्यूट्रलाइज कर देता है। इस तरह जो जहर होता है वो नेवले के नर्वस सिस्टम तक नहीं पहुंच पाता। कई जानकारों का दावा है कि नेवले और सांप की लड़ाई में 75 से 80 बार नेवले की ही जीत होगी।

कुत्तों की तरह भौंकती है चिड़िया आवाज सुनकर हो जाएंगे कनफ्यूज

सुकून से बैठकर चिड़ियों के चहचहाने की आवाज सुनना सभी को अच्छा लगता है, लेकिन क्या कोई पक्षी कुत्तों की तरह भौंक सकता है? आप सोच रहे होंगे कि भला ऐसा भी हो सकता है क्या? हालांकि इस वक्त सोशल मीडिया पर एक ऐसी ही चिड़िया दिख रही है, जो चहचहाने के बजाय भौंक-भौंककर लोगों को हैरान कर रही है। जिस तरह जानवरों को पालने का शौक लोग रखते हैं, वैसे ही कुछ लोगों को चिड़िया पालने का भी शौक होता है । कोई तोता-मैना तो कोई रंग-बिरंगी चिड़ियां को पालकर अपना घर गुलज़ार करता है। वैसे विदेशों में एक ऐसी भी चिड़िया होती है, जो कुत्तों की तरह भौंककर दिखा सकती है। वायरल हो रहे एक वीडियो में चिड़िया बिल्कुल कुत्तों की तरह भौंक रही है। जब तक आप इसे देखते नहीं हैं, तब तक आप समझेंगे कि आवाज़ कुत्ते की ही है। जब ये सामने आती है, तब सच पता चलता है। इस चिड़िया को cockatoos कहते हैं। यह पक्षी तोते की फैमिली से ताल्लुक रखता है। Sandiegozoo के मुताबिक, कॉकाटूज़ ऑस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं। ये नीलगिरि के पेड़ों से लेकर चीड़ के जंगलों में रहते हैं। वीडियो को सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर @unilad नाम के अकाउंट पर शेयर किया गया है। यूजर ने कैप्शन दिया है, ये तो अद्भुत है। कुछ ही घंटे पहले अपलोड हुए वीडियो को करीब 16 हजार से ज्यादा लोग लाइक कर चुके हैं, जबकि ढेरों ने मजेदार तरह से रिएक्ट किया है। कुछ ने कहा कि, अच्छा है ये सिर्फ भौंकती है, काटती नहीं। वहीं कुछ यूज़र्स का कहना था कि ये कुत्ते की जॉब लेकर मानेगी।

केजरीवाल ने मुख्य सचिव को बदलने के लिए केन्द्र सरकार से मांगी सहमति

» दिल्ली सरकार नरेश कुमार की जगह पीके गुप्ता को बनाना चाहती है मुख्य सचिव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली में अरविंद केजरीवाल की सरकार सुप्रीम कोर्ट से मिली पावर के बाद एक्शन में नजर आ रही है। पहले सेवा सचिव आशीष मोरे को हटाकर के लिए उपराज्यपाल वीके सक्सेना को प्रस्ताव भेजा और अब दिल्ली के मुख्य सचिव को हटाने के लिए केंद्र सरकार को प्रस्ताव भेजा गया है। उपराज्यपाल के माध्यम से मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने केंद्र से सहमति मांगी है।

दिल्ली सरकार नरेश कुमार की जगह पीके गुप्ता को मुख्य सचिव बनाना चाहती है। जिसके लिए दिल्ली सरकार ने केंद्र को प्रस्ताव भेज दिया है। बता दें कि पीके गुप्ता 1989 बैच के आईएएस अधिकारी हैं और अभी एसीएस हैं।

सेवा सचिव को भी बदलने की तैयारी में है आप सरकार

वहीं दूसरी तरफ दिल्ली सरकार ने बुधवार को सेवा सचिव आशीष मोरे को हटाकर एके सिंह को पद देने के लिए उपराज्यपाल वीके सक्सेना को प्रस्ताव भेजा था। सिविल सर्विस बोर्ड की बैठक के बाद यह फैसला लिया गया। इसमें अधिकारियों ने सेवा सचिव को हटाए जाने पर किसी तरह की असहमति नहीं जताई। इसके बाद दिल्ली सरकार ने एके सिंह को नया सेवा सचिव बनाने का प्रस्ताव उपराज्यपाल को भेजा। इस प्रस्ताव में सरकार ने सुप्रीम कोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि उपराज्यपाल निर्वाचित सरकार की सलाह मानने के लिए बाध्य हैं। सेवा सचिव को हटाने के लिए दिल्ली सरकार कई बार प्रयास कर चुकी है। सुप्रीम कोर्ट का आदेश आने के बाद सेवा विभाग के मंत्री सौरभ भारद्वाज ने वर्तमान सेवा सचिव को हटाने का आदेश दिया लेकिन उन्हें पद से नहीं हटाया गया।

हिंदुजा समूह के चेयरमैन एस पी हिंदुजा का निधन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। हिंदुजा समूह के चेयरमैन और चार हिंदुजा भाइयों में सबसे बड़े श्रीचंद परमानंद हिंदुजा का को लंदन में निधन हो गया। वह 87 साल के थे.।

हिंदुजा परिवार के एक प्रवक्ता ने उनके निधन की सूचना दी. हिंदुजा पिछले कुछ समय से बीमार चल रहे थे. प्रवक्ता ने कहा,गोपीचंद, प्रकाश एवं अशोक हिंदुजा समेत समस्त हिंदुजा परिवार बड़े दुख के साथ सूचित कर रहा है कि परिवार के मुखिया एवं हिंदुजा समूह के चेयरमैन एस पी हिंदुजा का निधन हो गया है.'' भारतीय मूल के हिंदुजा ने बाद में ब्रिटेन की नागरिकता ले ली थी और वह लंदन में ही रहते थे।

लोकभवन के सामने दंपती ने किया आत्मदाह का प्रयास

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के निगोहां के इमालियाखेड़ा गांव के चौकीदार ने पत्नी संग गुरुवार की सुबह लोकभवन के सामने आत्मदाह की कोशिश की। हालांकि वहां पहले से मौजूद पुलिस वालों ने दंपति को पकड़ लिया और हजरतगंज कोतवाली ले गए।

निगोहा के इमालियाखेड़ा गांव में चौकीदार मनोहर लाल पासी उर्मिला संग रहते है। गुरुवार की सुबह करीब 11 बजे वो पत्नी संग लोकभवन के पास पहुंचे और ज्वलनशील पदार्थ डाल कर आत्मदाह की कोशिश की।

इस दौरान पहले से सुरक्षा डयूटी पर मौजूद पुलिस वालों ने आग लगाने से पहले ही दंपती को पकड़ लिया। दंपती को कोतवाली ले जाया गया है।

बातचीत की गई तो दंपती ने प्रधान पति पर चुनावी रंजिश के चलते उत्पीड़न का आरोप लगाया है। पीड़ितों का कहना है कि आरोपी पक्ष मुकदमे में समझौते का दबाव डाल रहे हैं।

गौतम अडानी ने 5,800 मीटर से गिरे पर्वतारोही को किया एयरलिफ्ट

» अनुराग मालो के भाई आशीष मालो ने ट्विटर पर व्यक्त किया आभार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारतीय उद्योगपति गौतम अडानी ने एयर एंबुलेंस भेजकर पर्वतारोही अनुराग मालो की मदद की थी। अनुराग मालो एक प्रसिद्ध पर्वतारोही हैं जो कि पिछले महीने नेपाल के माउंट अन्नपूर्णा से एक गहरी खाई में गिर गए थे। इसके बाद उन्हें काठमांडू से नई दिल्ली के एम्स लाया गया था। अनुराग मालो के भाई आशीष मालो ने ट्विटर पर गौतम अडानी के प्रति आभार व्यक्त किया है कि उन्होंने समय रहते एयर एंबुलेंस की व्यवस्था की और उनके भाई को बचा लिया गया।

आशीष ने ट्वीट में लिखा कि समय पर एयरलिफ्टिंग के लिए वह बहुत आभारी हैं। उन्होंने लिखा कि उनके भाई आनुराग मालो को सुरक्षित वापस लाने में उनके अमूल्य सहयोग के लिए गौतम अडानी और अडानी फाउंडेशन का हार्दिक धन्यवाद। राजस्थान के किशनगढ़ के रहने वाले मालो पिछले महीने की 17 तारीख को 5,800 मीटर की ऊंचाई से गिर गए थे। यह हादसा उस वक्त हुआ जब वह अन्नपूर्णा पर्वत के थर्ड कैंप से नीचे उतर रहे थे।

माउंट अन्नपूर्णा पूरी दुनिया का 10वां सबसे ऊंचा माउंटेन है यह माउंटेन अपने दुर्गम इलाकों के लिए जाना जाता है। गिरने के तीन दिन बाद 20 अप्रैल की सुबह उन्हें बचाया गया था जहां पर उन्हें पास के मेडिकल कैंप में ले जाया गया था। इसके बाद उन्हें पोखरा के मणिपाल हॉस्पिटल में शिफ्ट किया गया फिर काठमांडू के मेडिसिटी में भर्ती किया गया था। इस दौरान उनके परिवार ने अडानी फाउंडेशन से एयरलिफ्ट अरेंज करने और इसका खर्चा उठाने की गुहार लगाई थी।

उनका परिवार इस पूरे खर्चे को उठाने में असमर्थ था क्योंकि उन्हें नेपाल में ग्राउंड ट्रांसफर करके दिल्ली तक लाना था। ऐसे में गौतम अडानी आगे आए और उनके फाउंडेशन एयर एंबुलेंस की व्यवस्था की। जिससे अनुराग को दिल्ली एम्स लाया गया। जहां उनका इलाज किया जा रहा है। वहीं, अनुराग के भाई आशीष ने गौतम अडानी और उनकी पत्नी को इस नेक काम के लिए धन्यवाद दिया है। क्योंकि इस फाउंडेशन को दोनों हैड करते हैं।

पंजाब की हार से प्लेऑफ में फंसा पेंच

» हैदराबाद के मैच पर निर्भर टीमों का भविष्य

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पंजाब किंग्स को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2023 में प्ले-ऑफ की रेस के दौरान एक बड़ा झटका लगा है। दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) ने पंजाब किंग्स (पीबीकेएस) को 15 रन से हरा दिया। 13 मुकाबलों में 12 प्वाइंट के साथ पीबीकेएस आठवें स्थान पर है। हालांकि टीम का एक मैच अभी बाकी है। लीग के अगले चरण में पहुंचने की संभावना काफी कम दिखाई दे रही है।

पंजाब का अगला मुकाबला शुक्रवार को राजस्थान रॉयल्स (आरआर) से होगा। एक हार दोनों टीमों को लीग से बाहर कर सकती है। एक जीत से दोनों के अगले चरण में पहुंचने की संभावनाएं काफी कम है और खासतौर पर पंजाब की। अगर हम प्वाइंट टेबल देखें, तो पंजाब के 12 प्वाइंट और -0.308 नेट रन-रेट (एनआरआर) है। आरआर का भी 12 प्वाइंट के साथ +0.140 एनआरआर है। इसलिए पंजाब के आगे जाने के लिए एक जीत काफी नहीं होगी। हालांकि सीजन में राजस्थान और पंजाब का भविष्य दूसरी टीमों पर ज्यादा निर्भर है और खासतौर से सनराइजर्स हैदराबाद इनकी मदद कर सकता है। हैदराबाद प्वाइंट टेबल में 10वें स्थान पर है और जो आज रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) के साथ भीड़ेगा।

किंग्स का सफर खत्म

हैदराबाद की एक जीत से आरसीबी के 13 मैचों में 12 प्वाइंट ही रहेंगे, जबकि आरसीबी के इस जीत से 14 प्वाइंट हो जाएंगे। इसके बाद आरसीबी का एक मैच बाकी है। आरसीबी के पास +0.166 का एनआरआर है।हालांकि पंजाब और राजस्थान दोनों के लिए इस सीजन का सफर खत्म हो जाएगा, अगर चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके), लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) और आरसीबी की टीमों ने अपने बाकी मैच जीत लिए। सीएसके और एलएसजी दोनों के 15 प्वाइंट हैं। शनिवार को सीएसके का मुकाबला कैपिटल्स से होगा। दूसरी ओर लखनऊ का मैच कोलकाता से होगा। दोनों को एक जीत 17 प्वाइंट के साथ प्लेऑफ में एंट्री दिलाएगी। किसी एक के लिए हार सीजन को काफी दिलचस्प बना सकती है। आरसीबी और मुंबई इंडियंस का सफर 16 प्वाइंट पर समाप्त हो सकता है।

तमिलनाडु में जल्लीकट्टू को 'सुप्रीम इजाजत'

राज्य सरकार के कानून को सही ठहराया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। तमिलनाडु में सांडों को काबू करने वाले खेल जल्लीकट्टू को अनुमति देने वाले राज्य सरकार के कानून को सुप्रीम कोर्ट ने सही ठहराया है। सुप्रीम कोर्ट ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा कि नए कानून में क्रूरता के पहलू का ध्यान रखा गया है। खेल सदियों से तमिलनाडु की संस्कृति का हिस्सा और इसे बाधित नहीं किया जा सकता। सांड़ों के साथ क्रूरता का हवाला देते हुए कानून रद्द करने की मांग की गई थी।

याचिका में कानून को संसद से पास पशु क्रूरता निरोधक कानून का उल्लंघन बताया गया था, जिसे कोर्ट ने खारिज कर दिया। कोर्ट ने कहा कि अगर कोई पशु से क्रूरता करे तो उस पर कार्रवाई हो। याचिकाओं पर उच्चतम न्यायालय के जस्टिस केएम जोसेफ, अजय रस्तोगी, अनिरुद्ध बोस, ऋषिकेश रॉय और सीटी रविकुमार की पांच जजों की संविधान पीठ ने फैसला सुनाया। उन्होंने कहा कि जल्लीकट्टू कई सालों से खेले जाने वाला पारंपरिक खेल है, जिसपर रोक लगाना सही नहीं होगा।

बैलगाड़ी दौड़ को भी मंजूरी

महाराष्ट्र में बैलगाड़ी दौड़ और कर्नाटक के कंबाला खेल के खिलाफ लगी याचिका को भी कोर्ट ने खारिज कर दिया है। कोर्ट ने कहा कि तीनों अधिनियम वैध हैं और इसमें पशुओं की सुरक्षा सुनिश्चित की गई है।

सत्येंद्र जैन ने सुप्रीम कोर्ट से लगाई गुहार

शीर्ष अदालत ने जमानत याचिका पर ईडी से मांगा जवाब

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को दिल्ली के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन की जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) से जवाब मांगा है। सत्येंद्र जैन मनी लॉन्ड्रिंग के केस में बीते कई महीने से दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद हैं।

जस्टिस एएस बोपन्ना और हिमा कोहली की बेंच ने ईडी को नोटिस जारी करते हुए जैन को यह स्वतंत्रता दी है कि वह अदालत की वैकेशन बेंच में राहत के लिए अपील कर सकते हैं। सत्येंद्र जैन की तरह से जिरह करने वाले वरिष्ठ वकील अभिषेक सिंघवी ने दलील दी कि पूर्व मंत्री का जेल में रहने के दौरान 35 किलो वजन घट गया है और वह कंकाल बनकर रह गए हैं। वह कई बीमारियों से भी ग्रस्त हैं। एडिशनल सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू जो ईडी की ओर से पक्ष रख रहे थे, ने कहा कि हम याचिका का विरोध करते हैं। इस पर अदालत ने अगली सुनवाई की कोई स्पष्ट तारीख नहीं दी और कहा कि राहत के लिए जैन वैकेशन बेंच में अपील कर सकते हैं।

फोटो:4 पीएम

धरना नई प्राथमिक शिक्षक भर्ती का विज्ञापन जारी करने को लेकर मुख्यमंत्री आवास के पास पहुंचे शिक्षकों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

बिहार के छपरा में मिड डे मील खाकर 35 बच्चे बीमार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार के छपरा जिले में मिड डे मील खाकर 35 से ज्यादा बच्चे बीमार हो गए। ये हादसा तब हुआ जब बच्चों के खाने में छिपकली गिर गई। यही मरी हुई छिपकली एक बच्चे की थाली में चली गई। इसके बाद बच्चे ने शोर मचाया।

छात्र की थाली में मिली मरी छिपकली

सदर प्रखंड के डुमरी में सरकारी विद्यालय में मिड डे मील खाने से 35 से अधिक बच्चे बीमार हो गए। बताया जा रहा है कि मिड डे मील में मरी हुई छिपकली मिलने के बाद बच्चे हंगामा करने लगे। इस घटना के बाद स्कूल में अफरा-तफरी मच गई और खाना का वितरण रोक दिया। उत्क्रमित कन्या मध्य विद्यालय रसुलपुर, टिकुलिया टोला, डुमरी, की यह घटना है। इस घटना के बाद सदर अस्पताल को अलर्ट कर दिया गया है। विद्यालय के छात्र आकाश कुमार ने बताया कि रोज की तरह आज सुबह बच्चे एमडीएम का भोजन करने के लिए भोजन लेकर खा रहे थे। तभी आकाश की थाली में मरी हुई छिपकली निकली।

आकाश ने इस बात की सूचना शिक्षकों को दी जिसके बाद अफरा तफरी मच गई। आनन-फानन में मिड डे मील के वितरण को रोका गया। थोड़ी देर बाद बच्चों की तबीयत बिगड़ने लगी और देखते ही देखते 50 बच्चे बीमार हो गए। विद्यालय की प्रभारी प्रधानाध्यापिका पूनम कुमारी ने बताया कि एनजीओ के जरिए मिड डे मील का वितरण किया जाता है। पिछले कुछ दिनों से भोजन में काफी गड़बड़ियां पाई जा रही है।

सपा के मैदान में उतरने से दिलचस्प हुआ चुनाव

एमएलसी चुनाव: बीजेपी के दोनों प्रत्याशियों ने दाखिल किया नामांकन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

फोटो: सुमित कुमार

लखनऊ। सपा के प्रत्याशी उतारने से एमएलसी चुनाव दिलचस्प हो गया है। जहां भाजपा के घोषित विधान परिषद सदस्य प्रत्याशी पदमसेन चौधरी और मानवेन्द्र गुरुवार (18 मई) ने को नामांकन पत्र दाखिल कर दिया। वहीं सपा से पूर्व एमएलसी रामजतन राजभर और रामकरण निर्मल मैदान में उतरे। गौरतलब हो कि पहले दोनों बीजेपी प्रयाशियों के निर्विरोध निर्वाचन की संभावना थी। लकिन सपा ने भी अपने दो उम्मीदवारों चुनावी मैदान में उतार दिया है। जिसके चलते अब मतदान होगा।

इसके पूर्व भाजपा प्रत्याशी पार्टी के राज्य मुख्यालय पर सुबह 11 बजे पहुचें। यहां से दोनों प्रत्याशी उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, बृजेश पाठक और पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के साथ सुबह बीजेपी मुख्यालय से निकलकर भाजपा विधान मण्डल दल कार्यालय पहुंचे। यहां भाजपा एमएलसी उम्मीदवार पदमसेन चौधरी और मानवेंद्र सिंह ने मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री द्वय की उपस्थिति में विधान सभा में विधान परिषद उपचुनाव के लिए अपना नामांकन दाखिल किया।

सपा के उम्मीदवारों ने पर्चे भरे

समाजवादी पार्टी ने विधान परिषद चुनाव के लिए पूर्व एमएलसी रामजतन राजभर और रामकरण निर्मल को उम्मीदवार बनाया है। इस दोनों प्रत्याशियों ने सपा नेता व कार्यकर्ताओं की मौजूदगी में गुरुवार को नामांकन दाखिल कर दिया है। हालांकि, इस दौरान पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव मौजूद नहीं रहे। समाजवादी पार्टी ने मऊ निवासी पूर्व एमएलसी रामजतन राजभर को उम्मीदवार बनाकर पूर्वांचल की अति पिछड़े वर्ग में शामिल राजभर जाति के वोट बैंक को संभालने की कोशिश की है तो दूसरी तरफ कौशांबी निवासी रामकरण निर्मल धोबी बिरादरी से हैं। निर्मल के जरिए पार्टी नेतृत्व ने युवाओं को खुद से जोड़े रखने की रणनीति बनाई है।

प्रदेश में सुबह-सुबह हल्की बारिश, पर गर्मी बेअसर, दो-तीन दिन चलेंगी तेज हवाएं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भीषण गर्मी के बीच देश में कई जगह चल रही तेज हवाओं से मौसम में नमी बनी हुई है। इस बीच देर रात दिल्ली-एनसीआर समेत कई जगहों पर गरज के साथ बारिश हुई। मौसम विभाग का पूर्वानुमान है कि बृहस्पतिवार को हल्की वर्षा भी हो सकती है। वहीं राजधानी लखनऊ समेत यूपी के कई शहरों में आज सुबह तेज हवा के साथ हल्की बूंदाबादी भी हुई।

मौसम विभाग ने दिल्ली और एनसीआर में तेज हवाओं के चलने का अनुमान जताया है। मौसम विभाग के अनुसार, बृहस्पतिवार को भी

दिल्ली में तेज हवाएं चलेंगी। आसमान में बादल छाए रहेंगे। कुछ जगहों पर हल्की वर्षा हो सकती है। अगले कुछ दिन तक तेज हवाओं के चलने का सिलसिला जारी रहेगा। आगामी रविवार को अधिकतम तापमान 43 डिग्री तक जा सकता है। सोमवार और मंगलवार को फिर हल्की वर्षा होने की संभावना जताई गई है। 19 को तापमान में बढ़ोतरी देखने को मिल सकती है, जबकि 23 पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय हो सकता है।

राजस्थान में दो लोगों की मौत

मौसम विभाग ने बताया कि 19 से 21 मई के दौरान राजस्थान के अधिकांश हिस्सों में मौसम शुष्क रहने की संभावना है और तापमान में 2 से 3 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि होने की संभावना है। इससे पहले धौलपुर जिले में बुधवार शाम आकाशीय बिजली गिरने से दो युवकों की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए हैं।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।